# खण्ड-'क' अपठित बोध

## अध्याय - 1 अपठित गद्यांश

### स्मरणीय बिन्दु

अपठित गद्यांश वह अंश है, जो पहले से न पढ़ा हो। किसी भी अपठित गद्यांश को पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित गद्यांश का लक्ष्य है।

अपठित गद्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

⇒ गद्यांश के भावार्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए। इस हेतु दिए गए गद्यांश को ध्यान से कम से कम दो बार पढ़ लें।

⇒ गद्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें जिनमें किन्हीं प्रश्नों के उत्तर संभव हों।

⇒ यदि गद्यांश में से शब्दों के अर्थ पूछे गये हों तो प्रसंगानुसार ही उनके अर्थ लिखें।

⇒ शीर्षक देते समय गद्यांश के मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या समूह अथवा वाक्यांश चुनना चाहिए।

⇒ शीर्षक कम से कम शब्दों का होना चाहिए।

⇒ प्रश्नों के उत्तर अंकों के अनुसार लघु अथवा अति लघु रूप में होने चाहिए।

❑❑

## अध्याय - 2 अपठित काव्यांश

### स्मरणीय बिन्दु

अपठित काव्यांश वह लेख है, जो पहले न पढ़ा हो। किसी भी काव्यांश को बिना किसी की सहायता से पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित काव्यांश का लक्ष्य है।

**अपठित काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–**

- काव्यांश के भावार्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए।
- काव्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें जिनमें किन्हीं प्रश्नों के उत्तर संभव हों।

**रेखांकित भाग को पढ़ते हुए प्रश्नों के सर्वाधिक उचित विकल्प पर निशान लगाएँ।**

- यदि काव्यांश में से शब्दों के अर्थ पूछे गए हों तो प्रसंगानुसार ही उनके अर्थ लिखें।
- शीर्षक देते समय काव्यांश के मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द समूह अथवा वाक्यांश चुनना चाहिए।
- शीर्षक कम-से-कम शब्दों का होना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर अंकों के अनुसार लघु अथवा अति लघु रूप में होने चाहिए।

❑❑

# खण्ड-'ख' व्याकरण बोध

## अध्याय - 1 वर्ण-विच्छेद

### स्मरणीय बिन्दु

**वर्ण**—भाषा की लिखित या मौखिक छोटी-से छोटी ध्वनि, जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है।

उदाहरणतया—क्, ज्, फ्, प्, त्, अ, ए आदि।

**वर्णमाला**—किसी भी भाषा को लिखने के लिये प्रयुक्त होने वाले वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

**वर्ण-विच्छेद**—संश्लिष्ट वर्णों (ध्वनियों) को अलग-अलग करना ही वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद करते समय व्यंजन के साथ लगी स्वर की मात्राओं के स्थान पर पूरा स्वर ही लिखा जाता है तथा व्यंजन वर्ण के नीचे हलन्त (्) लगाया जाता है। उदाहरणतया क में क् और अ ध्वनियों का संगम है। अत: क का वर्ण-विच्छेद है—क् + अ।

**वर्ण-व्यवस्था के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम**

(1) प्रत्येक व्यंजन हलंत-सहित होता है; जैसे-क्, ख्, च्, ट्, त्, प्, य् आदि। वस्तुत: व्यंजन ध्वनि का निर्माण व्यंजन और स्वर के संयोग से होता है।

(2) व्यंजन का उच्चारण स्वर के बिना नहीं किया जा सकता। इसलिये अक्षरमाला में उसे क् + अ = क, ख् + अ = ख, च् + अ = च आदि रूपों में लिखा जाता है।

(3) व्यंजन में आ, इ, उ, ऋ, ए ओ आदि स्वरों के योग से निम्नलिखित रूप बनते हैं—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क् + आ = का | क् + इ = कि | क् + ई = की | क् + उ = कु |
| क् + ऊ = कू | क् + ऋ = कृ | क् + ए = के | क् + ऐ = कै |
| क् + ओ = को | क् + औ = कौ | क् + इँ = किं | क् + उँ = कुँ |
| क् + एँ = कें (कँ) | क् + आँ = कों (काँ) | क् + अ: = क: | |

(4) अन्य व्यंजनों में स्वरों के योग से भी सामान्यतया इसी प्रकार के रूप बनते हैं।

**संयुक्ताक्षर संयोग—**

क् + ष् + अ = क्ष  त् + र् + अ = त्र  ज् + ञ् + अ = ज्ञ  श् + र् + अ = श्र

**द्वित्व (द्वित्व) सम्बन्धी नियम**—हिन्दी में द्वित्व वाले रूपों में निम्न व्यवस्था है-'द्य', 'द्व', द्ध, ह्न, ह्म, क्र, र्क आदि में पहले वाला वर्ण स्वर-रहित अर्थात् हल् व्यंजन होता है तथा दूसरा वाला वर्ण सस्वर होता है; जैसे—

द्य = द + य् + अ  द्व = द् + व् + अ  ह्य = ह् + य् + अ

ह्म = ह् + म् + अ  ह्न = ह + न् + अ  क्र = क् + र् + अ

❑❑

## अध्याय - 2 अनुस्वार, अनुनासिक तथा नुक्ता

### स्मरणीय बिन्दु

#### अनुस्वार ( ं )

अनुस्वार का अर्थ होता है स्वर के बाद आने वाला। अनुस्वार एक व्यंजन ध्वनि है। इसके उच्चारण में नासिका से अधिक साँस निकलती है, मुख से कम; उदाहरणतया-पंजाब, अंग, पंच, गंगा आदि। अनुस्वार की ध्वनि लेखन के स्तर पर अनुस्वार चिह्न ( ं ) के द्वारा प्रयुक्त होती है।

शब्द के मध्य में अनुस्वार अपने परवर्ती व्यंजन वर्ग के नासिक्य व्यंजन (पंचमाक्षर) यानि ङ्, ञ्, ण्, न् तथा म् के स्थान पर यह ( ं ) वर्णमाला का पंचम वर्ण है और ङ्, ञ्, ण्, न्, म् के स्थान पर प्रयोग किया जाता है; जैसे—

क वर्ग – ङ् = रंग (रङ्ग) पंकज (पङ्कज)
च वर्ग – ञ् = मंच (मञ्च) चंचल (चञ्चल)
ट वर्ग – ण् = पंडित (पण्डित) खंड (खण्ड)
त वर्ग – न् = हिंदी (हिन्दी) शांत (शान्त)
प वर्ग – म् = कंपन (कम्पन) अंबा (अम्बा)

श, ष, स, ह के पूर्व पंचमाक्षर का नहीं, ( ं ) बिन्दु का प्रयोग होता है तथा सम् उपसर्ग के बाद जो शब्द अंतस्थ या ऊष्म वर्णों से प्रारम्भ होते हैं तो म् निश्चित रूप से अनुस्वार हो जाता है;

जैसे–सम् + वाद = संवाद, सम् + यंत्र = संयंत्र

## अनुनासिक ( ँ )

जब हम उच्चारण करते हैं तो उस समय जब हवा मुँह और नासिका दोनों से निकले, तो उस वर्ण के ऊपर चंद्र बिन्दु ( ँ ) लगाया जाता है उसे अनुनासिक भी कहते हैं। अनुनासिक ध्वनि के उच्चारण में नाक से कम और मुँह से अधिक साँस निकलती है। जैसे–अँधेरा, आँसू, अँगोछा आदि।

अनुनासिक स्वर का गुण व अनुस्वार अनुनासिक्य व्यंजन का रूप है। यही इन दोनों में मूल अंतर है। लेकिन यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा के साथ चन्द्रबिन्दु की जगह ( ं ) बिन्दु आये तो वहाँ बिन्दु ( ं ) अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिकता मानी जाती है। जैसे-कैंची, चींटी, आदि। इसका प्रयोग सभी स्वरों के साथ हो सकता है।

## नुक्ता

हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्दों के व्यंजनों के नीचे की तरफ एक बिन्दु ( . ) लगायी जाती है इस बिन्दी को नुक्ता या पादबिंदु कहते हैं। अंग्रेजी व उर्दू की ज़ व फ़ ध्वनियाँ हिन्दी की ज तथा फ से अलग होती है। इनके उच्चारण में भिन्ता होती हैं।

उदाहरणतया–इज़, ज़रा, कर्ज़, जुल्फ, फ्रेंच, फीचर, फरमान, फकीर आदि।

❑❑

# अध्याय – 3 उपसर्ग

## स्मरणीय बिन्दु

**उपसर्ग**–वे सार्थक शब्दांश जो किसी शब्द के पहले लगकर शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

**उदाहरण**–उपकार = उप + कार, अपकार = अप + कार, विकार = वि + कार। यहाँ उप, अप, वि उपसर्ग हैं।

हिन्दी भाषा में संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग प्रचलित हैं। इस समय हिन्दी के प्रयुक्त होने वाले उपसर्गों की संख्या निश्चित नहीं है।

**विशेष**–(1) उपसर्ग भाषा के सार्थक खण्ड होते हैं।

(2) उपसर्ग का प्रयोग शब्दांश के रूप में होता है।

(3) उपसर्ग का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

(4) उपसर्ग शब्द के आरम्भ में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करते हैं।

जैसे–हार एक मूल शब्द है जिसमें सामान्यत: दो अर्थ लिये जा सकते हैं–माला और पराजय। किन्तु उपसर्गों के योग से 'हार' शब्द से अनेक नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे–बिहार, प्रहार, आहार, उपहार, संहार। हिन्दी भाषा में उपसर्ग तीन प्रकार के हैं–

**(1) तत्सम उपसर्ग**–जो उपसर्ग संस्कृत भाषा से अपने मूलरूप में हिन्दी में आए है, उन्हें तत्सम उपसर्ग कहते हैं। जैसे–आ, अव, अति, अधि, अनु, अप, अभि, उप, उत्, दुर, दुस्, निर्, नि, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, सत्, सह, स्व।

जैसे–
आ + जन्म = आजन्म
अव + गुण = अवगुण
अति + रिक्त = अतिरिक्त
अधि + वक्ता = अधिवक्ता
अनु + मान = अनुमान
प्रति + दिन = प्रतिदिन

सह + चर = सहचर
स्व + जन = स्वजन

**(2) तद्भव उपसर्ग**—ये उपसर्ग मूलत: संस्कृत (तत्सम) उपसर्गों से ही विकसित हुये हैं। ये ही हिन्दी उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे-अ, अन, (हिन्दी के उपसर्ग) उन, कु, नि, पर, स, सु, अध, भर, चौ।

जैसे—
अ + छूत = अछूत
दु + साध्य = दुसाध्य
भर + पेट = भरपेट
पर + हित = परहित
अध + खुला = अधखुला
चौ + पाल = चौपाल
स + कुशल = सकुशल
उन + सठ = उनसठ

**(3) आगत उपसर्ग**—ये उपसर्ग विदेशी भाषाओं (उर्दू, फारसी) से हिन्दी में आये हैं। जैसे-ब, बा, वे, बद, खुश, ना, ला, गैर, हम, हर, (विदेशी) दर, सर, कम।

जैसे—
बा + अदब = बाअदब
बद़ + तमीज़ = बदतमीज
ना + पसंद = नापसंद
ला + वारिस = लावारिस
खुश + नसीब = खुशनसीब
गैर + हाज़िर = गैरहाजिर
हम + राह = हमराह
सर + पंच = सरपंच

❑❑

# अध्याय - 4 प्रत्यय

## स्मरणीय बिन्दु

वे शब्दांश जो शब्द या धातु के अंत में जुड़कर यौगिक शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। यथा—होनहार, सुंदरता। इन शब्दों में 'होन' व 'सुन्दर' मूल शब्द हैं और इनके अंत में क्रमश: 'हार' व 'ता' शब्दांश जुड़े हैं, वे प्रत्यय हैं। प्रत्यय के दो भेद हैं—(1) कृत प्रत्यय, (2) तद्धित प्रत्यय।

विशेष—(1) प्रत्यय अविकारी शब्द है।
(2) प्रत्यय का अपना कोई विशेष अर्थ नहीं होता।
(3) प्रत्यय का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।
(4) प्रत्यय शब्द के अंत में लगा कर अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

प्रत्यय मूल रूप से दो प्रकार के होते हैं—

**(1) कृत प्रत्यय**—जो प्रत्यय क्रिया के मूल (धातु, रूप) के साथ लगा कर संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं वे 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे—
दौड़ + ना = दौड़ना
तैर + आक = तैराक
पूज + अनीय = पूजनीय
पढ़ + आ = पढ़ा
पहन + आवा = पहनावा

**प्रमुख कृत प्रत्यय**—वाला, अक्कड़, वैया, क, आलु, हार, आकू, इयल, आन, आवट, अनीय, आवा, आहट, आई, औना, आस, आ।

**(2) तद्धित प्रत्यय**—जो प्रत्यय सदैव संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण के साथ जुड़ते है वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे—
गरीब + ई = गरीबी
कला + कार = कलाकार
भूगोल + इक = भौगोलिक
सती + त्व = सतीत्व
नमक + ईन = नमकीन

**प्रमुख तद्धित प्रत्यय**—मान, वान, इक, ईला, ई, आई, आपा, त्व, हारा, एरा, ईय, आन, आस, आहट, आनी, पन, तन, ईन, इया, इन।

**उर्दू के प्रत्यय**—आना, कार, दान, बास, वार, खाना, खोर, गीर, आनी।

**उपसर्ग व प्रत्यय का एक साथ प्रयोग—**

जैसे—

| उपसर्ग | + | मूलशब्द | + | प्रत्यय | = | नवीन शब्द |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बे | + | चैन | + | ई | = | बेचैनी |
| अभि | + | मान | + | ई | = | अभिमानी |
| अ | + | समाज | + | इक | = | असामाजिक |
| अप | + | मान | + | इत | = | अपमानित |
| उप | + | कार | + | ई | = | उपकारी |

❑❑

# अध्याय - 5 सन्धि

## स्मरणीय बिन्दु

सन्धि— 'सन्धि' शब्द का अर्थ है—मेल या मेल-मिलाप। दो वर्णों के परस्पर मेल से ध्वनि या ध्वनियों में होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं।

जैसे — पुस्तक + आलय = पुस्तकालय (अ + आ = आ), रमा + ईश = रमेश (आ + ई = ऐ)

**संधि विच्छेद**—संधि के नियमों द्वारा निर्मित वर्णों को उनकी पूर्वावस्था में लाना संधि कहलाता है।

जैसे— गिरिश = गिरि + ईश, इत्यादि = इति + आदि, स्वागत = सु + आगत।

**सन्धि के प्रकार**—सन्धि के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. विसर्ग सन्धि

**(1) स्वर संधि**—दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं;

जैसे—हिम + आलय में अ + आ के मेल से 'आ' हो गया- हिमालय।

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं—

**(क)** दीर्घ संधि **(ख)** गुण संधि **(ग)** यण संधि **(घ)** वृद्धि संधि **(ङ)** अयादि संधि

**(क) दीर्घ संधि**—जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आएँ तो मिलकर दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं। इस संधि का परिणाम दीर्घ स्वर होता है, अतः इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

जैसे —

**(i)**

| | |
|---|---|
| अ + अ = आ | परम + अर्थ = परमार्थ |
| अ + आ = आ | देव + आलय = देवालय |
| आ + अ = आ | विद्या + अर्थी = विद्यार्थी |
| आ + आ = आ | महा + आत्मा = महात्मा |

| | | |
|---|---|---|
| **(ii)** | इ + इ = ई | मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र |
| | इ + ई = ई | गिरि + ईश = गिरीश |
| | ई + इ = ई | मही + इन्द्र = महीन्द्र |
| | ई + ई = ई | नदी + ईश = नदीश |
| **(iii)** | उ + उ = ऊ | सु + उक्ति = सूक्ति |
| | उ + ऊ = ऊ | लघु + ऊर्मि = लघूर्मि |
| | ऊ + उ = ऊ | वधू + उत्सव = वधूत्सव |
| | ऊ + ऊ = ऊ | वधू + ऊर्जा = वधूर्जा |

**(ख) गुण संधि**—अ और आ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, ई, उ, ऊ या ऋ आयें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाता है। संस्कृत व्याकरण में अ, आ, ए को 'गुण' कहते हैं, इसीलिए यह नाम पड़ा है। जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| **(i)** | अ + इ = ए | सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र |
| | अ + ई = ए | नर + ईश = नरेश |
| | आ + इ = ए | महा + इन्द्र = महेन्द्र |
| | आ + ई = ए | रमा + ईश = रमेश |
| **(ii)** | अ + उ = ओ | पर + उपकार = परोपकार |
| | अ + ऊ = ओ | जल + ऊर्मि = जलोर्मि |
| | आ + उ = ओ | महा + उत्सव = महोत्सव |
| | आ + ऊ = ओ | गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि |
| **(iii)** | अ + ऋ = अर् | देव + ऋषि = देवर्षि |
| | आ + ऋ = अर् | महा + ऋषि = महर्षि |

**(ग) वृद्धि संधि**—जब अ, आ के बाद ए, ऐ या ओ, औ स्वर आएँ तो दोनों के स्थान पर क्रमशः 'ऐ' और 'औ' हो जाते हैं। संस्कृत व्याकरण में ऐ, औ को 'वृद्धि' कहते हैं। अतः यह नाम पड़ा है। जैसे —

| | | |
|---|---|---|
| **(i)** | अ + ए = ऐ | एक + एक = एकैक |
| | अ + ऐ = ऐ | मत + ऐक्य = मतैक्य |
| | आ + ए = ऐ | सदा + एव = सदैव |
| | आ + ऐ = ऐ | महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य |
| **(ii)** | अ + ओ = ओ | दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ |
| | आ + ओ = ओ | महा + ओजस्वी = महोजस्वी |
| | अ + औ = औ | वन + औषधि = वनौषधि |
| | आ + औ = औ | महा + औदार्य = महौदार्य |

**(घ) यण संधि —** जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आएँ तो इ का य्, उ का व तथा ऋ का र हो जाता है; जैसे —

| | | |
|---|---|---|
| **(i)** | इ + अ = य् | यदि + अपि = यद्यपि |
| | इ + आ = या | इति + आदि = इत्यादि |
| | इ + उ = यु | अति + उत्तम = अत्युत्तम |
| | इ + ऊ = यू | नि + ऊन = न्यून |
| | उ + अ = व | सु + अच्छ = स्वच्छ |
| | उ + आ = वा | सु + आगत = स्वागत |
| | उ + इ = वि | अनु + इति = अन्विति |
| | ऊ + आ = वा | वधू + आगमन = वध्वागमन |
| | इ + ए = ये | प्रति + एक = प्रत्येक |
| | उ + ए = वे | अनु + एषण = अन्वेषण |
| | ऋ + आ = रा | पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा |

**(ङ) अयादि संधि —** यदि ए, ऐ और ओ, औ के पश्चात् इन्हें छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो इनका परिवर्तन क्रमशः अय, आय, अव, आव में हो जाता है। यथा —

**(i)**

| | |
|---|---|
| ए + अ = अय | ने + अन = नयन |
| ऐ + अ = आय | नै + अक = नायक |
| ओ + अ = अव | पो + अन = पवन |
| औ + अ = आव | पौ + अक = पावक |

**(2) व्यंजन संधि—**व्यंजन का व्यंजन या स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो विकार होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे— सत् + जन = सज्जन

**व्यंजन संधि के नियम—** व्यंजन संधि के नियम निम्नलिखित हैं—

**(क)** वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में बदल जाना—यदि किसी भी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के आगे किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा व्यंजन या य, र, ल, व, ह या कोई स्वर आए तो वर्ग का प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, ब्) में बदल जाता है।

जैसे—

| | |
|---|---|
| क् + अ = ग | दिक् + अम्बर = दिगम्बर |
| क् + ग = ग्ग | दिक् + गज = दिग्गज |
| क् + द = ग्द | वाक् + दान = वाग्दान |
| क् + ज = ग्ज | वाक् + जाल = वाग्जाल |
| च + अ = ज | अच् + अंत = अजंत |
| त + ज = ज्ज | जगत् + जाल = जगज्जाल |
| प + ज = ब्ज | अप् + ज = अब्ज |

**(ख) न् के स्थान पर ण—**यदि न् से पहले ऋ, र्, ष् हो और इनके बीच में स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य र ल, व, ह आदि का व्यवधान हो तो न् के स्थान पर ण् हो जाता है।

जैसे— परि + मान = परिमाण
भूष + अन = भूषण
विष् + नु = विष्णु
प्र + नाम = प्रणाम

**(ग)** स के पूर्व अ और आ को छोड़कर कोई स्वर हो, तो 'स्' ष् में बदल जाता है।

जैसे— अभि + सेक = अभिषेक
नि + सिद्ध = निषिद्ध
अभि + सव = अभिषव

**(घ) म् में परिवर्तन—**जब म् के बाद क् से म् तक का कोई वर्ण हो तो म्, बाद के व्यंजन के वर्ण का पाँचवां वर्ण हो जाता है लेकिन क् से म् के बाद का वर्ण हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| जैसे— | म् + ग = ङ | सम् + गति = संगति |
| | म् + त = न् | सम् + तोष = सन्तोष |
| | म् + प = म् | सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण |
| | म् + य = ं | सम् + योग = संयोग |
| | म् + स = ं | सम् + शय = संशय |

**(ङ)** जब त् या द् का संयोग च/छ से हो तो च्, ज/झ से हो तो ज्, ट/ठ से हो तो ट, ड/ढ से हो तो ड्, ल से हो तो ल् हो जाता है। यदि त् के बाद 'श' हो तो त् के स्थान पर च् और 'श' के स्थान पर 'छ'; यदि त् के बाद 'ह' हो तो 'त्' का 'द्' और 'ह' का ध् या ध हो जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| जैसे— | त + च = च्च | सत् + चरित्र = सच्चरित्र |
| | त् + ज = ज्ज | सत् + जन = सज्जन |
| | त् + ड = ड्ड | उत् + डयन = उड्डयन |
| | त् + ल = ल्ल | उत् + लेख = उल्लेख |
| | त् + श = च्छ | त् + ह = द्ध |
| | सत् + शास्त्र सच्छास्त्र | उत् + द्धार = उद्धार (उद्धार) |

**3. विसर्ग संधि**—विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, वह विसर्ग संधि कहलाता है।

जैसे— मनः + नयन = मनोनयन

**(क) विसर्ग संधि के नियम**—विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद अ, वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग ओ में बदल जाता है। जैसे—

मनः + बल = मनोबल
तेजः + मय = तेजोमय
मनः + रथ = मनोरथ
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध
मनः + रंजन = मनोरंजन

**(ख)** जब विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और विसर्ग के बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ग या र, य, ल, व हो तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है।

जैसे— निः जन = निर्जन
निः धन = निर्धन
पुनः जन्म = पुनर्जन्म
निः + गुण = निर्गुण

**(ग)** विसर्ग से पूर्व इ, उ हो और विसर्ग के बाद क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग ष् में परिवर्तित हो जाता है।

जैसे—

चतुः + पाद = चतुष्पाद
निः + फल = निष्फल
दुः + फल = दुष्फल
निः + काम = निष्काम
निः + कलंक = निष्कलंक

**(घ)** जब विसर्ग के बाद श, ष, स हो तो विसर्ग अपरिवर्तित रहता है।

जैसे— दुः शासन = दुःशासन
निः संदेह = निःसंदेह

❑❑

# अध्याय - 6 विराम-चिह्न

## स्मरणीय बिन्दु

'विराम का अर्थ है' रुकना। जिस प्रकार ट्रैफिक लाइट हमें संकेत देती है कि कब रुकना है, कब चलने के लिये तैयार रहना है और कब आगे बढ़ना है, उसी प्रकार किसी भी वाक्य को बोलते व लिखते समय विराम-चिह्न ही हमें संकेत देते हैं कि कब थोड़ा रुकना है अथवा कब पूर्ण रूप से विराम करना है। कब प्रश्नात्मक भाव व्यक्त करना है और कब विस्मय आदि का भाव व्यक्त करना है।

इस प्रकार, वाक्य बोलते या लिखते समय विराम प्रकट करने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

**हिन्दी के विराम चिह्न निम्नलिखित हैं—**

| | **नाम** | **चिह्न** |
|---|---|---|
| **1.** | पूर्ण विराम | । |
| **2.** | अल्प विराम | , |
| **3.** | अर्द्ध विराम | ; |
| **4.** | प्रश्नसूचक | ? |
| **5.** | विस्मयादि बोधक | ! |
| **6.** | योजक | - |
| **7.** | निर्देशक | — |
| **8.** | कोष्ठक | (), {} |
| **9.** | उद्धरण | "", '' |
| **10.** | विवरण | : — |

**11.** हँसपद (त्रूटिपूरक चिह्न) ‸
**12.** उपविराम :
**13.** लाघव ०

**1. पूर्ण विराम ( । )**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य के अंत में–

**उदाहरण –**

**(i)** विकास मुंबई गया।
**(ii)** मोहित ने कहा कि मैं पुस्तकालय जाऊँगा।
**(iii)** निकिता ने मुकेश को आवाज दी, परंतु उसने सुना नहीं।

**(ख)** अप्रत्यक्ष प्रश्न वाले वाक्यों के अंत में –

**उदाहरण –**

मैंने नलिनी से पूछा कि वह क्या कर रही है।

**(ग)** दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छंदों के पहले चरण के अंत में एक पूर्ण विराम तथा दूसरे चरण के अंत में दो पूर्ण विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।

**उदाहरण –**

गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो मिलाय।।

**(घ)** पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य पूर्ण हो जाने पर किया जाता है अतः प्रत्येक है, था के बाद इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि वाक्य पूरा हो गया है या नहीं।

**(ङ)** और से पहले कभी पूर्ण विराम नहीं लगता।

**2. अल्प विराम ( , )**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** वाक्य में शब्दों के जोड़ों को अलग करने के लिए –

**उदाहरण –** दु:ख और सुख, पाप और पुण्य – ये सब ईश्वर के बनाए हुए हैं।

**(ख)** उपाधियों को अलग करने के लिये –

**उदाहरण –** बी.ए., एम.ए., एम.फिल

**(ग)** किसी उद्धरण से पूर्व–

**उदाहरण–** मोहन ने कहा, "उसने स्कूल छोड़ दिया है।"

**(घ)** एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति होने पर –

**उदाहरण–** भागो, भागो, तूफान आ गया।

**(ङ)** विशेषण उपवाक्यों के बीच में –

**उदाहरण–** वह लड़का, जिसे हमने कल देखा था, मोहित का बड़ा भाई है।

**(च)** हाँ या नहीं के बाद –

**उदाहरण –**

**(i)** हाँ, मैं चलफिर सकता हूँ।
**(ii)** नहीं, तुम यह पुस्तक मत पढ़ो।

**3. अर्द्ध विराम ( ; )**

प्रयोग स्थितियाँ–

**(क)** विपरीत अर्थ प्रकट करने के लिए –

**उदाहरण–** उसने मोंटू को गाली दी; फिर भी वह चुप रहा।

**(ख)** किसी नियम के उदाहरण सूचक शब्द से पूर्व –

**उदाहरण –** अक्सर स्त्रियों के नामों के साथ 'देवी' शब्द जोड़ा जाता है; जैसे लक्ष्मी देवी।

**(ग)** समानाधिकरण वाले वाक्यों के बीच में –

**उदाहरण –** आज भारत में बेरोजगारी है; भूख है; क्षेत्रवाद का जोर है।

**4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में –

**उदाहरण** – क्या आप बाजार जा रहे हैं?

**(ख)** संदेहात्मक या अनिश्चयात्मक वाक्यों के अंत में –

**उदाहरण** – कल आप ही मिले थे?

**(ग)** व्यंग्यात्मक वाक्यों के अंत में –

**उदाहरण** – देश के नेताओं के कारनामों से इंद्र भी शरमा जाए?

**5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** संबोधन शब्दों के बाद –

**उदाहरण** – मोहन! यहाँ आओ।

**(ख)** विस्मयसूचक शब्दों, पदबंधों अथवा वाक्यों के अंत में –

**उदाहरण –**

**(i)** वाह! क्या सुंदर दृश्य है।

**(ii)** ओह! भारत मैच हार गया।

**(ग)** जिन प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा न हो–

**उदाहरण–** अब क्या होना है!

**6. योजक (-)**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** द्वंद्व समास के बीच में –

**उदाहरण** – माता-पिता, पाप-पुण्य।

**(ख)** पुनरुक्त या युग्म शब्दों के बीच में –

**उदाहरण** – तेज-तेज, कल-कल

**(ग)** शब्दों में लिखी जाने वाली अपूर्ण संख्याओं के बीच में –

**उदाहरण** – तीन-चौथाई, एक-तिहाई

**(घ)** सा, सी, से आदि तुलनात्मक शब्दों के बीच में –

**उदाहरण** – कबीर-सा भक्त, मीरा-सी दीवानी।

**(ङ)** पदबंध को सामासिक बनाने के लिए –

**उदाहरण** – दौड़ते-वौड़ते, चाय-वाय।

**7. निर्देशक (—)**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** वाक्यांश या पद की व्याख्या के लिए –

**उदाहरण** – तुम्हें एक अच्छा नागरिक बनना है –परिश्रम, लगन और कार्यकुशलता से।

**(ख)** संवादों/वार्तालापों में नामों के बाद –

**उदाहरण** – मोहिनी – कहिए क्या हाल है?

विभू – ठीक हूँ।

**(ग)** 'निम्नलिखित' से प्रारंभ होने वाले वाक्य के अंत में –

**उदाहरण –** निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए –

**(घ)** अवतरण या अंश को लिखकर उसके लेखक का नाम लिखना हो –

**उदाहरण –** ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' – तिलक

**8. कोष्ठक (( ) {})**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए –

**उदाहरण –** सरकार ने पुल निर्माण हेतु टेंडर (निविदा) आमंत्रित की।

**(ख)** किसी शब्द या वाक्य को स्पष्ट करने के लिए –

**उदाहरण –** मुंशी (प्रेमचंद) जी प्रसिद्ध उपन्यासकार थे।

**9. विवरण चिह्न (:–)**

किसी बात का उत्तर अथवा उदाहरण अगली पंक्ति में देने के लिए जिस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है, वह विवरण चिह्न कहलाता है। जैसे –

**(क)** टिप्पणी के लिए नीचे देखें :–

**(ख)** विशेषण के चार भेद होते हैं :–

**10. उद्धरण चिह्न ('.....' ''.....'')**

प्रयोग स्थितियाँ –

**(क)** शीर्षक लिखने में –

**उदाहरण –** 'महाभारत' के रचयिता वेदव्यास जी हैं।

**(ख)** किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उधृत करने के लिए –

**उदाहरण –** नेता जी कहते हैं – 'करो या मरो'

**(ग)** विशिष्टता दिखाने के लिए –

**उदाहरण –** घोड़ो का घर 'अस्तबल' होता है

**11. त्रुटि पूरक या हंस पद (∧)**

प्रयोग स्थितियाँ –

जब लिखने से कुछ छूट जाये –

**उदाहरण –** दूसरों∧उपकार करने वाले व्यक्ति दुर्लभ हैं। (का)

**12. उप विराम या अपूर्ण विराम (:)**

प्रयोग स्थितियाँ –

शीर्षक लिखने में–

**उदाहरण –** मेघदूत: कुछ विचारणीय प्रसंग

**13. लाघव (°)**–इस चिह्न का प्रयोग शब्दों को संक्षिप्त रूप में दिखाने के लिये किया जाता है। जैसे:

प्रयोग स्थितियाँ –

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए–

**उदाहरण –** डॉक्टर– डॉ०

पण्डित – पं०

❑❑

# खण्ड 'ग' पाठ्य पुस्तक : स्पर्श (भाग-1)

## अध्याय - 1 दु:ख का अधिकार — *यशपाल*

### लेखक परिचय

यथार्थवादी शैली के विशिष्ट रचनाकार यशपाल जी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में सन् 1903 में हुआ। काँगड़ा में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बी.ए. लाहौर के नेशनल कॉलेज से किया। भगतसिंह और सुखदेव के सम्पर्क में आने के बाद ये स्वाधीनता संग्राम से जुड़ गये। जिसके फलस्वरूप जेल भी जाना पड़ा। सन् 1976 में इनका देहान्त हो गया।

यशपाल जी ने सामाजिक विषमता, राजनैतिक पाखंड व रुढियों को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बना उनका विरोध किया। जिनमें ज्ञानदान, झूठा सच, दादा कामरेड, फूलों का कुर्ता, पिंजरे की उड़ान, अमिता आदि मुख्य रचनाएँ हैं।

### पाठ का सारांश

'दु:ख का अधिकार' यशपाल की एक मार्मिक कहानी है। इसमें एक निर्धन परिवार की करुणापूर्ण वेदना का यथार्थ चित्रण है। भगवाना एक गरीब नवयुवक था। वह नगर के पास एक खेत में फल, सब्जी उगाकर उन्हें बेचकर परिवार का गुजारा करता था। एक दिन वह सवेरे खरबूजे तोड़ने गया तो उसे साँप ने डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई। घर में उसकी बूढ़ी माँ, पत्नी और बेटा-बेटी थे। घर में जो कुछ थोड़ा-बहुत था, वह तो भगवाना के क्रिया-कर्म में लग गया। अब भूख से लड़ने के लिए भगवाना की माँ को पुत्र शोक को मन में दबाकर बाजार में खरबूजे बेचने बैठना पड़ा। उसका इस प्रकार बैठना बाजार के धनी लोगों को खलता है। वे उसे तरह-तरह से ताना मारते हैं। तब लेखक भगवाना की माँ के पुत्र शोक की तुलना एक धनी महिला के पुत्र शोक से करता है, जो एक वर्ष पूर्व अपने पुत्र के शोक से ढाई मास पलंग से उठ न सकी थी जबकि डॉक्टर दिन-रात उसकी सेवा में रहते थे।

लेखक एक दिन बाजार में जा रहा था। उसने देखा कि वहाँ फुटपाथ पर कुछ तो डलिया में और कुछ जमीन पर बिक्री के लिए खरबूजे पड़े थे। खरबूजों के समीप ही एक अधेड़ उम्र की गरीब वृद्धा दोनों घुटनों में सिर दिये रो रही थी। उधर बाजार के लाला लोग उसके सम्बन्ध में घृणा से बात कर रहे थे। लेखक ने भी जानने की कोशिश की।

लेखक को पूछने पर पता चला कि बुढ़िया का एक जवान बेटा था-भगवाना। माँ-बेटे के अतिरिक्त घर में भगवाना की पत्नी और दो बच्चे (एक बेटा एक बेटी) भी थे। भगवाना शहर के पास ही जमीन के एक छोटे-से-टुकड़े पर फल और सब्जी उगाकर अपने परिवार का निर्वाह करता था। बाजार में खरबूजे आदि बेचने कभी वह स्वयं बैठता और कभी उसकी बूढ़ी माँ बैठती।

एक दिन सवेरे-सवेरे भगवाना खरबूजे तोड़ने गया तो उसे साँप ने डस लिया। विष उतारने के लिए ओझा बुलाया गया। जो कुछ पास में था, वह ओझा की भेंट हो गया, पर फिर भी भगवाना न बचा। अपने कड़े-कंगन बेचकर माँ ने उसका कफन मँगाया तब दाह-संस्कार हुआ, अब घर में कुछ खाने को भी न रहा और न कोई पैसा ही बुढ़िया के पास था।

अगले दिन सवेरे बच्चे उठे। भूख के कारण रोने लगे तो बूढ़ी दादी ने उन्हें खाने को खरबूजे दे दिये, पर बहू को कुछ न दे सकी। वह भी ज्वर से तप रही थी।

तब उस वृद्धा ने भगवाना के इकट्ठे किए खरबूज डलिया में डाले उन्हें बेचने बाजार में आ गई, पर पुत्र-शोक के कारण वह फफक-फफक कर मुँह छुपाये रो रही थी। कितना कठोर दिल था, उसका, जो गरीबी के कारण पुत्र-शोक होने पर भी बाजार में सौदा बेचने आ गई थी।

उस वृद्धा की स्थिति को देख उसके पुत्र-शोक की तुलना के लिए लेखक को गत वर्ष की एक घटना याद आई कि उसके पड़ोस में एक कुलीन धनिक स्त्री पुत्र वियोग के कारण ढाई महीने चारपाई से उठ न सकी। दिन-रात उसका इलाज भी चलता रहा और इधर यह स्त्री है, जो निर्धनता और भूख के कारण दिल पर पत्थर रखकर पुत्र की मृत्यु के दूसरे दिन ही बाजार में सौदा बेचने आ गई है।

इसको देखकर लोग उस पर ताना मारने से नहीं चूकते, उसका छुआ सामान लोग खरीदने से कतराते हैं। लेखक इस स्थिति को देखकर बहुत दु:खी हुआ और माना कि लोग अमीर-गरीब में भेद-भाव करते हैं। लोग अमीर-गरीब को अलग-अलग नजरों से देखते हैं यह समाज की एक बुराई है। हमें भेदभाव की नीति नहीं रखनी चाहिए, लोगों का ताना कसना दु:ख को बढ़ावा देता है लोगों को सहानुभूतिपूर्वक गरीब के दु:ख को समझना चाहिए लेखक यह संदेश देना चाहता है कि गरीबों को भी दु:ख मनाने का अधिकार होना चाहिए।

### शब्दार्थ

**पोशाक**—पहनावा; **सहूलियत**—आराम; **मुँह-अंधेरे**—सवेरे; **बरकत**—बढोत्तरी; **खसम**—पति; **लुगाई**—पत्नी; **कछियारी**—खेतों में सब्जी-फल इत्यादि उगाना; **ओझा**—झाड़-फूँक करने वाला; **निर्वाह**—गुजारा; **द्रवित**—पिघलना; **अड़चन**—विघ्न; **बेहया**—निर्लज्ज; **व्यथा**—दु:ख; **श्रेणियाँ**—वर्ग; **बदन**—शरीर; **मूर्छा**—बेहोश; **मुर्दा**—लाश; **सहसा**—अचानक; **व्यवधान**—रुकावट; **दफे**—बार; **संभ्रात**—अमीर-सभ्य।

❑❑

# अध्याय - 2 एवरेस्ट—मेरी शिखर यात्रा — *बछेन्द्री पाल*

## लेखक परिचय

बछेन्द्री पाल का जन्म 24 मई 1954 को उत्तरांचल के चमोली जिले में बंपा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम किशन सिंह पाल तथा माता का हंसादेई नेगी है। परिवार के आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद स्वयं सिलाई-कढ़ाई कर बछेन्द्री पाल ने एम.ए., बी.एड. की उच्च शिक्षा हासिल की।

बछेन्द्री को बचपन से ही पहाड़ों पर चढ़ने का चाव था इसलिए जब इंडियन माउंटेन फाउंडेशन ने एवरेस्ट अभियान के लिए साहसी महिलाओं की खोज शुरू की तो बछेन्द्री भी इस अभियान में शामिल हो गयीं। बछेन्द्री ने अपने ट्रेनिंग काल में ही 7500 मी. ऊँची मान चोटी पर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर ली। जिससे इनका हौंसला और बुलंन्द हो गया तथा सतत् अभ्यास व लगन के बल पर एवरेस्ट विजय हासिल करने वाली प्रथम भारतीय महिला का गौरव प्राप्त किया।

## पाठ का सारांश

बछेन्द्री पाल हिमालय के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला हैं। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने अपनी यात्रा की चर्चा की है। इस यात्रा में उन्हें भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जिस दिन उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की उसी दिन से दिक्कतें शुरू हो गईं। जहाँ से उन्हें यात्रा शुरू करनी थी, वहीं कड़ी ठण्ड पड़ रही थी। तेज बर्फीली हवायें चल रही थीं। लेकिन बछेन्द्री उनसे डरी नहीं बल्कि एवरेस्ट के प्रति उनका आकर्षण और तीव्र हुआ। अगले दिन में दो लोगों की मृत्यु हुई जो घबरा देने के लिए काफी थी किन्तु उनके नेता कर्नल खुल्लर ने मौत को सहज भाव से लेने की बात कर उत्साह भर दिया। उनका बेसकैम्प भी काफी ऊँचाई पर स्थित था जहाँ अनियमित रूप से हिमपात हो रहा था। पहले तीन दिन उन्हें पर्वतारोहण के बारे में आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया। इसी दौरान तेनजिंग शेरपा से इस दल की मुलाकात हुई जो काफी प्रेरणादायक रही। 15-16 मई 1984 का दिन बछेन्द्री के लिए हादसे वाला सिद्ध हुआ। जिस जगह इनका कैम्प लगा हुआ था वहीं बर्फ का एक भारी चट्टाननुमा टुकड़ा आकर गिर गया। सभी लोग उसमें दब गये। दैवयोग से किसी की मृत्यु नहीं हुई। लेकिन बछेन्द्री को छोड़कर बाकी लोग घायल हो गये और वापस भेज दिये गये। बर्फ खोदकर बछेन्द्री को निकाला गया। इस घटना से उनकी हिम्मत और बढ़ गई।

इतनी कठिन परिस्थितियों में भी उन्हें अपने साथियों की मदद करने का विचार रहता। ऐसे ही एक मौके पर वह एक साथी की मदद के लिए नीचे उतर आईं। 'साउथ कोल कैम्प' पर इनका अगला कैम्प लगा।

अगले दिन नाश्ता करके लेखिका अपने तम्बू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था। वह बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई करने वाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। उसने लेखिका से साथ चलने के लिए पूछा। सुबह 6.20 पर वे दोनों साउथ कोल से बाहर निकले। ठंड बहुत थी। दोनों निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए। दो घंटे से कम समय में वे शिखर कैम्प पर पहुँच गए। ल्हाटू उनके पीछे-पीछे आ रहा था। ल्हाटू एक नायलॉन की रस्सी लाया था। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय उनके सन्तुलन के लिए पकड़ रखी थी। रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाते ही चढ़ाई आसान लगने लगी। दक्षिण शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। लेखिका की साँस मानो रुक गई थी। उसे विचार कौंधा कि सफलता बहुत नजदीक है। लेखिका 23 मई 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर एवरेस्ट की चोटी पर जा खड़ी हुई। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली वह प्रथम भारतीय महिला थीं।

एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति एक साथ खड़े हो सकें। चारों ओर हजारों मीटर लम्बी सीधी ढलान थी। सुरक्षा का प्रश्न सामने था। उसने फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित किया। इसके बाद वह घुटनों के बल बैठीं, बर्फ को अपने माथे से लगाया और 'सागरमाथे' के ताज का चुम्बन लिया। उसने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उन्हें लाल कपड़े में लपेटा और छोटी-सी पूजा अर्चना की फिर इन्हें बर्फ में दबा दिया। लेखिका को इस आनंद के क्षण में अपने माता-पिता का ध्यान आया। इसके बाद उसने उठकर हाथ जोड़े और अंगदोरजी के प्रति आदर-भाव से झुकीं। उन्होंने उसे गले लगाया और कानों में फुसफुसाया—"दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

कुछ देर बाद सोनम पलजर और उन्होंने फोटो लेने शुरू किए। इस समय तक ल्हाटू ने नेता को एवरेस्ट पर चारों के होने की सूचना दे दी। तब लेखिका के हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने बधाई दी। वे बोले—"मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।"

## शब्दार्थ

**रज्जू**—रस्सी; **उपस्कर**—आरोही की आवश्यक सामग्री; **ग्लेशियर**—बर्फ की नदी; **अग्रिम**—आगे वाला; **अभियांत्रिकी**—तकनीकी; **प्लूम**—बर्फ के बड़े फूल जैसा पिंड; **शंकु**—नोक; **जोखिम**—खतरा; **बेस-कैंप**—आधार शिविर; **अवसाद**—उदासी, दु:ख; **अवगत कराना**—जानकारी देना; **शिखर**—चोटी, मुकुट; **कर्मठता**—कर्म के प्रति निष्ठा; **अनियमित**—नियमित न हो; **हिमपात**—बर्फ गिरना; **नौसिखिया**—नयी-नयी सीखने वाली; **पर्वतारोही**—पर्वतों पर चढ़ने वाला; **हिमविदर**—बर्फ में दरार; **अभियान**—किसी काम के लिए प्रतिबद्धता।

❑❑

# अध्याय - 3 तुम कब जाओगे, अतिथि — *शरद जोशी*

## लेखक परिचय

हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में सन् 1931 में हुआ। इन्होंने कुछ समय तक नौकरी करने के बाद लेखन के क्षेत्र में पर्दापण किया। कहानी लेखन से शुरूआत करने के बाद ये धीरे-धीरे व्यंग्य लेखन करने लगे। इन्होंने व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम के साथ हास्य व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ व संवाद भी लिखे। हिन्दी साहित्य जगत में व्यंग्य को प्रतिष्ठित करने में इन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। सन् 1991 में इनका निधन हो गया।

परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, एक था गधा, अंधों का हाथी, तिलस्म आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

इन्होंने समाज की सभी विसंगतियों का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में कर पाठकों को चकित कर दिया। मुहावरों व हास्य व्यंग्य इनकी रचनाओं के प्राण हैं।

## पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' हिन्दी के महान् व्यंग्यकार शरद जोशी द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने ऐसे व्यक्तियों की खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना सूचना दिए चले जाते हैं और फिर जाने का नाम नहीं लेते, भले ही उनके रहने से मेजबान को कितनी भी कठिनाई हो, उन पर कितना भी भार क्यों न पड़े? वास्तव में अच्छा अतिथि तो वही होता है, जो पहले से ही अपने आने की सूचना देकर आए और एक या दो दिन की मेहमानी कराकर विदा ले। लेकिन इस पाठ में वर्णित अतिथि की तरह जो होगा, उसे तो मेजबान गेट आउट कहने पर विवश होना पड़ेगा। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि अतिथि के एक या दो दिन के बाद अपने घर लौट जाने में ही उसकी गरिमा है, उसका देवत्व सुरक्षित है तथा सत्कार की ऊष्मा बनी रहती है। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस पाठ का संदेश है, प्रेरणा है, शिक्षा है।

लेखक कहता है कि अतिथि को आए चार दिन बीत गए थे। इसलिए लेखक का मन बार-बार यह सोचने पर विवश हो जाता था कि अतिथि कब जाएगा? लेखक तथा उसकी पत्नी ने अतिथि का बहुत ही गर्मजोशी से स्वागत किया। उसे खूब अच्छी तरह से खिलाया-पिलाया, सिनेमा दिखाया तथा अतिथि की मेहमाननवाजी में कोई भी कसर न छोड़ी। लेकिन अतिथि ने जब अपने धोने वाले कपड़ों को लांड्री में देना चाहा तो लेखक को लगा अतिथि हमेशा देवता नहीं होते। क्योंकि हर तरह के विषय पर अतिथि के साथ गप्पें हो चुकी थीं, जिक्र हो चुका था। उसके बाद मौन-सा छा गया था, बोरियत होने लगी थी, भावनाएँ भी अपशब्दों का रूप धारण कर रही थीं। लेकिन इसके बावजूद अतिथि जाने का नाम नहीं ले रहा था। इससे अच्छे तो ऐस्ट्रॉनाट्स थे, जो लाखों मील लम्बी यात्रा करने के बाद भी लम्बे समय तक चाँद पर नहीं रुके थे। इसलिए बार-बार लेखक का मन सोचने पर विवश हो जाता कि अतिथि कब जाएगा? उसे उसका घर तो स्वीट लग रहा है, लेकिन दूसरे के घर की मिठास क्यों अपनी उपस्थिति से समाप्त कर रहा है? अतिथि का पाँचवा दिन था। इस देवता और अतिथि में अंतर होता है, क्योंकि देवता तो दर्शन देकर चले जाते हैं, इसी में उनका देवत्व है। इसलिए अतिथि को लौट जाना चाहिए। और अपना देवत्व पहचान कर इसे बरकरार रखने का प्रयास करना चाहिए।

## शब्दार्थ

**आगमन**—आना; **निस्संकोच**—संकोच रहित; **गुंजायमान**—गूँजती हुई; **चरण**—पैर; **निर्मूल**—मूलरहित; **मार्मिक**—मर्मस्पर्शी; **उपवास**—व्रत; **एस्ट्रोनॉट्स**—अंतरिक्ष यात्री; **शनैः-शनै**—धीरे-धीरे; **आघात**—चोट; **सदैव**—हमेशा; **सतत**—निरंतर; **संक्रमण**—एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना; **औपचारिक**—रस्मी; **कोनलों**—कोनों से; **छोर**—किनारा; **प्रतीत**—लगना; **अंतरंग**—घनिष्ठ; **अप्रत्याशित**—अचानक; **सामीप्य**—समीपता; **नम्रता**—नरमी; **सौहार्द**—हृदय की सरलता; **चतुर्थ दिवस**—चौथा दिन; **सादर**—आदर के साथ।

❑❑

# अध्याय - 4 कीचड़ का काव्य — *काका कालेलकर*

## लेखक परिचय

काका कालेकर का जन्म सन् 1885 में महाराष्ट्र के सतारा नगर में हुआ। उनकी मातृभाषा मराठी होते हुए भी उन्हें गुजराती, हिन्दी, बांग्ला और अंग्रेजी आदि भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त था। उन्होंने गाँधी जी के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार व प्रचार में योगदान दिया और स्वयं भी हिन्दी में लेखन करने लगे। देश के आजाद होने के बाद भी काका आजीवन गाँधीजी के विचार और साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचने में जुटे रहे। विनोबा भावे, सीमांत गाँधी अब्दुल गफ्फार खाँ के समान ही काका कालेकर भी गाँधीजी के अनुनायी थे। नई दिल्ली में गाँधी संग्रहालय

के निकट सन्निधि में काका के जीवन से जुड़ी बहुत सी वस्तुएँ और उनका साहित्य आज भी देखा जा सकता है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—हिमालयनो प्रवास, लोकमाता (यात्रा वृतांत) स्मरण यात्रा (संस्मरण), धर्मोदय (आत्मचरित), जीवनी आनंद अबरनावर (निबन्ध संग्रह) आदि काका ने कई वर्षों तक मंगल प्रभात नामक पत्र का सम्पादन कार्य भी किया।

सरल, सरस, ओजस्वी व सारगर्भित भाषा को प्रयोग काका ने अपने लेखन में किया। सभी विषयों की तर्कपूर्ण ढंग से व्याख्या करना काका के लेखन की विशेषता थी। सन् 1982 में काका कालेकर जी का निधन हो गया।

## पाठ का सारांश

'कीचड़ का काव्य' पाठ लेखक काका कालेलकर द्वारा रचित है। लेखक ने इस पाठ के अंतर्गत कीचड़ की उपयोगिता का काव्यात्मक शैली में वर्णन किया है। उनका कहना है कि हमें कीचड़ के गंदेपन पर नहीं जाना चाहिए। बल्कि हमें तो कीचड़ की उपयोगिता मानव-जीवन तथा पशुओं के जीवन में क्या है, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उत्तरी-पूर्वी राज्यों में तो सबसे अधिक पैदा होने वाली धान की फसल कीचड़ में ही उग पाती है। यदि कीचड़ न होता, तो मानव अनेक नियामतों से वंचित रह जाता इसलिए हमें यह स्वीकारना होगा कि कीचड़ हेय नहीं श्रद्धेय है। अर्थात् कीचड़ की उपलब्धता, उपयोगिता, उपादेयता आदि को दर्शाना ही इस पाठ का ध्येय है।

लेखक कहता है कि आकाश का, पृथ्वी का, जलाशयों का वर्णन तो सभी करते हैं, परंतु कभी कीचड़ का वर्णन करते हुए किसी को नहीं देखा कीचड़ में कोई भी पैर डालना पसंद नहीं करता, इससे शरीर मैला हो जाता है, कपड़े मैले होते हैं, कीचड़ उड़े और शरीर पर लगे, यह किसी को भी अच्छा नहीं लगता। कीचड़ के प्रति किसी को भी कोई सहानुभूति नहीं होती। वास्तव में कीचड़ में कम सौंदर्य नहीं होता। कलाविज्ञ लोग तो अधिकतर काले रंग ही पसंद करते हैं।

कीचड़ के सौंदर्य के विविध रूप हैं। जब कीचड़ सूख जाता है तो जमीन ठोस हो जाती है। इस पर गाय, भैंसों, भेड़, बकरियों के पैरों के निशान अंकित हो जाते हैं, तो यह दृश्य कम शोभनीय नहीं होता। कीचड़ पर पड़े निशान महिष कुल के भारतीय युद्ध के संपूर्ण इतिहास का बोध कराते हैं। मही नदी के मुख के आगे से जहाँ तक नजर पहुँचे, वहाँ तक सर्वत्र सनातन कीचड़-ही-कीचड़ दिखाई देती है। इस कीचड़ में तो पहाड़ के पहाड़ लुप्त हो जाते हैं। इसलिए मनुष्य को अगर ज्ञान होता तो वह कीचड़ का तिरस्कार न करता। अर्थात् मनुष्य कीचड़ को कीचड़ ही न समझता, बल्कि उसमें सौंदर्य को देखता है।

## शब्दार्थ

**आकर्षक**—सुन्दर; **नखरे**—बेवजह का हाव-भाव दिखलाना; **जलाशय**—तालाब; **कीचड़**—पैरों में चिपकने वाली गीली मिट्टी; **वृत्ति**—तरीका; **विज्ञ**—जानकार; **युक्ति शून्य**—विचारहीन; **भास**—आभास; **महिषकुल**—भैंसों का परिवार; **तटस्थता**—निष्पक्षता; **ठीकरा**—खपड़े का टुकड़ा; **कर्दम**—कचीड़; **अल्पोक्ति**—थोड़ा कहना; **पाड़े**—भैंस के नर बच्चे; **श्वेत**—सफेद; **पद चिह्न**—पैरों के निशान; **तृप्ति**—संतुष्टि; **सर्वत्र**—हर जगह; **लुप्त**—गायब; **मलिन**—गंदा; **आहादकत्व**—हर्ष का भाव; **कंठ**—गर्दन, गला; **सनातन**—हमेशा के लिए; **खोपरा**—नारियल।

❑❑

# अध्याय - 5 धर्म की आड़ — *गणेश शंकर विद्यार्थी*

## लेखक परिचय

गणेश शंकर विद्यार्थी जी का जन्म सन् 1891 में मध्य प्रदेश में स्थित ग्वालियर शहर में हुआ। एंट्रेस की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे कानपुर में करेंसी के दफ्तर में कार्य करने लगे। वे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपना साहित्यिक गुरु मानते थे। सन् 1921 में इन्होंने 'प्रताप' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू किया। देश की आजादी उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। प्रेरणा प्राप्त कर इन्होंने आजादी की भावना जगाने वाली रचना लिखी। इनका ज्यादातर जीवन जेल में ही बीता। अंग्रेज सरकार ने इनका अखबार बन्द कराने का भी प्रयास किया।

सन् 1931 में कानपुर में हुए साम्प्रदायिक दंगों को शांत कराते हुए इनके प्राण चले गए। विद्यार्थी जी ने आजादी की लड़ाई में आड़े आने वाली परम्पराओं और कृत्यों का अपने जीवन और लेखन में जमकर विरोध किया। वे गरीबों, किसानों, मजलूमी आदि के प्रति अपनी हमदर्दी को लेखन के माध्यम से प्रकट करते रहे। इनकी भाषा सरल व सहज होने के साथ ही बेहद मारक और सटीक प्रहार करने में सक्षम थी।

## पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'धर्म की आड़' गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने उन लोगों के इरादों और कुटिल चालों को बेनकाब किया है, जो धर्म की आड़ लेकर जनसाधारण को आपस में लड़ाकर स्वार्थ सिद्ध करते हैं तथा नेता लोग तो अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए कोई भी चाल चल सकते हैं और मानवता का गला घोंट सकते हैं। लेकिन अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले लोग हमारे देश में ही नहीं हैं, विदेशों में भी ऐसा होता है। वहाँ भी लोग धर्म की आड़ में बड़े-बड़े कुकर्म कर डालते हैं तथा अनीतियों का सहारा लेते हैं।

वास्तव में आज चारों ओर धर्म की धूम है। साधारण व्यक्ति तो धर्म के नाम पर कुर्बान हो जाता है। बेचारा वह क्या जाने धर्म के तत्त्वों को, इसी का लाभ कुटिल चालों वाले प्रतिष्ठित लोग उठाते हैं। धर्म की भावना तो ईश्वर की प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करती है, यह आत्मा को शुद्ध करने व ऊँचा उठाने का साधन है। इसलिए महात्मा गाँधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते थे, वे धर्म के बिना एक कदम भी नहीं चलते थे। उनके धर्म की परिभाषा उदारवादी थी।

शंख बजाने, माला फेरने, नमाज पढ़ने या तिलक-छाप लगाने का नाम धर्म नहीं है। शुद्ध आचरण तथा सदाचार धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। ईश्वर को धर्म के नाम पर कभी रिश्वत नहीं दी जा सकती। ऐसे धार्मिकों से तो नास्तिक आदमी कहीं अधिक अच्छे और ऊँचे हैं। इसलिए लेखक कहता है कि हमें मनुष्यत्व को अपनाना चाहिए, पशु-वृत्तियों को छोड़कर इंसानियत को पहचानना चाहिए।

## शब्दार्थ

**उत्पात**—उपद्रव; **ईमान**—नीयत; **बेजा**—गलत; **कसौटी**—जाँच; **प्रपंच**—धोखा; **धूर्त**—पाखंडी; **धनाढ्य**—धनवान; **जाहिल**—गँवार; **अट्टालिकाएँ**—ऊँची-ऊँची इमारतें; **भलमनसाहत**—शराफत; **ला-मजहब**—जिसका कोई धर्म न हो; **उदार**—दयालु; **खिलाफत**—खलीफा का पद जिसे पैगम्बर या बादशाह का प्रतिनिधि माना जाता हो; **वाजिब**—उचित; **यथार्थ**—वास्तविक।

❑❑

# अध्याय - 6 शुक्र तारे के समान — *स्वामी आनंद*

## लेखक परिचय

संन्यासी स्वामी आनंद का जन्म सन् 1887 में गुजरात के कठियावाड़ जिले के किमडी गाँव में हुआ। हिम्मतलाल इनका मूल नाम था। दस वर्ष की आयु में इन्हें कुछ आयु अपने साथ हिमालय ले गए और इनका नाम स्वामी आनंद रख दिया।

सन् 1907 में ये देश के स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गये। कुछ समय तक ये महाराष्ट्र से 'तरुण हिन्द' नामक अखबार निकालते रहे, बाद में बाल गंगाधर तिलक के 'केसरी' अखबार के लिए कार्य करने लगे। 1917 में गाँधीजी के संसर्ग में आने के बाद उन्हीं के निदेशन में 'नवजीवन' और 'यंग इंडिया' की प्रसार व्यवस्था में जुट गये। जिसके कारण ये गाँधी जी के साथ महादेव भाई देसाई व प्यारेलाल जी के निकट आये।

## पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ स्वामी आनंद द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने गाँधी जी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई की बेजोड़ प्रतिभा और उनकी व्यस्ततम दिनचर्या का बड़ा ही बारीकी से वर्णन किया है। उनकी सरलता, सज्जनता, निष्ठा, समर्पण, निरभिमान आदि विशेषताओं से लेखक पूरी तरह से अभिभूत है और उसने बड़ी ही कुशलता से इन विशेषताओं को अपने शब्दों में पिरोया है। लेखक के अनुसार कोई भी महान व्यक्ति, महानतम कार्य तभी कर पाता है, जब उसके साथ ऐसे सहयोगी हों, जो उसकी तमाम चिंताओं और उलझनों को अपने सिर ले लें। गाँधी जी के लिए महादेव भाई और भाई प्यारेलाल जी ऐसे ही सहयोगी थे।

लेखक कहता है कि शुक्र तारे की तरह ही भाई महादेव जी ने आधुनिक भारत की स्वतन्त्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे आकाश को जगमगाया तथा शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए। गाँधी जी के लिए वे पुत्र से भी अधिक थे तथा उनके उत्तराधिकारी थे। वे रोज मुलाकातें, पत्र-व्यवहार, आम सभाएँ आदि कामों के अलावा 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेख, टिप्पणियाँ, पंजाब के मामलों के सारे संक्षेप और गाँधी जी के लेख—यह सारी सामग्री वे केवल तीन दिन में तैयार करते थे।

पहले महादेव भाई ने सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी की थी। भारत में इनकी लिखाई का कोई सानी न था। इसलिए वाइसराय के पास जाने वाले पत्र हमेशा महादेव जी की लिखाई में होते थे। बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विस में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कोई खोजने पर भी मिलना नहीं था।

प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन-शैली की ईश्वरीय देन महादेव को मिली थी। गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद इन्होंने किया था। पर मीलों पैदल चलने के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जो इनकी असमय मृत्यु का कारण बना। गाँधी जी के दिल पर जीते जी इनकी मृत्यु का प्रभाव बना रहा। गाँधी जी इनको भूल न सके, इसलिए तो प्यारे लाल के स्थान पर गाँधी जी के मुख से महादेव ही निकलता। वास्तव में महादेव भाई तथा प्यारे लाल गाँधी जी के सच्चे सहयोगी थे।

## शब्दार्थ

**पेशा**—व्यवसाय; **हम्माल**—कुली; **लाड़ला**—प्यारा; **धुरंधर**—प्रवीण; **खर**—गधा; **पीर**—महात्मा; **ब्योरा**—विवरण; **रुबरु**—आमने-सामने; **सल्तनत**—हुकूमत; **अनायास**—अचानक; **सराबोर**—तरबतर; **सानी**—बराबरी करने वाला; **विवरण**—वर्णन; **अद्यतन**—अब तक का; **सिलसिला**—क्रम; **स्याह**—काला; **गाद**—तलछट; **ब्योरा**—विवरण; **चौकसाई**—नजर रखना; **जिगरी**—घनिष्ठ; **बावर्ची**—रसोइया; **आसुंलहिमाचल**—शेतु बाँध रामेश्वर से हिमाचल तक का विस्तार; **कलगी रूप**—तेज चमकने वाला तारा; **उषाकाल**—प्रात:काल; **तत्काल**—तुरन्त; **समूचे**—सारे।

❑❑

## काव्य-खण्ड

# अध्याय - 1 रैदास के पद — *भक्त कवि रैदास*

## कवि-परिचय

रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 में बनारस में हुआ माना जाता है। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर दिल्ली के शासक सिकन्दर लोदी ने इन्हें अपने दरबार में बुलवाया। रैदास भी कबीर के समान संत माने जाते हैं। इन्होंने भी मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों का अपने पदों के द्वारा विरोध किया। रैदास को मध्ययुगीन साधकों में विशेष स्थान प्राप्त है। वे व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे।

रैदास ने हृदय के भावों को सीधे-सादे पदों में बड़ी सहजता से प्रकट किया है। इनके द्वारा रचित पदों में आत्मनिवेदन, दास्यभाव, सहज भक्ति स्पष्ट दिखाई देती है। रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्मग्रन्थ 'गुरूग्रंथ साहब' में संकलित किए गए हैं।

रैदास ने अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों से युक्त ब्रजभाषा का अपनी काव्य-रचना में प्रयोग किया। सन् 1518 ई. में इनका निधन हो गया।

## कविता का सारांश

कवि रैदास ने पहले पद में अपने आराध्य राम की आराधना करते हुए कहा है कि उन्हें राम के नाम की धुन लग गई है। जिसे अब छोड़ पाना सम्भव नहीं है। कवि ने अपने प्रभु तथा स्वयं के सम्बन्ध को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्रभु आप चंदन तो मैं पानी, आप घनश्याम तो मैं मोर, आप चाँद तो मैं चकोर, आप दीपक तो मैं बाती, आप स्वामी तो मैं दास के समान हूँ। आपके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। मैं तो आपका दास हूँ।

दूसरे पद में कवि ने प्रभु को सबका रक्षक माना है। उसके प्रभु दीन-दुखियों पर दया करने वाले हैं। जिसे संसार अछूत मानता है पर परमात्मा बिना किसी से डरे निडर होकर उसका भी उद्धार कर देते हैं। जैसे उन्होंने कबीर, नामदेव, त्रिलोचन, सैनु जैसे निम्न जाति में उत्पन्न व्यक्तियों पर कृपा की और वैसे ही कवि पर कृपा कर उसे भी महान बना दिया।

## शब्दार्थ

**बास**—सुगंध; **सोनहिं**—सोने में; **जोति**—ज्योति, लौ; **जाकी**—जिसकी; **समानी**—समाना; **मोरा**—मोर; **घन**—बादल; **चितवत**—देखना; **चंद**—चाँद; **बरै**—जलती है; **राती**—रात में; **कउनु**—कौन; **गरीब निवाजु**—दीनो पर दया करने वाला; **माथे**—मस्तक पर; **छोति**—छुआछूत; **ढरै**—द्रवित होना; **गोबिंदु**—गोविन्द; **तरै**—तर गए, मोक्ष पा गए; **सरै**—संभव हो जाना; **हरिजीउ**—हरि जी से।

❑❑

# अध्याय - 2 रहीम के पद — *कविवर रहीम*

## कवि-परिचय

रहीम का जन्म सन् 1556 ई० में लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ। इनका पूरा नाम अर्ब्दरहीम खानखाना था। इन्हें अरबी, फारसी, संस्कृत और हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। ये मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवियों में रहीम का महत्वपूर्ण स्थान था साथ ही ये अकबर के नवरत्नों में शामिल थे।

इनके नीतिपरक दोहे अधिक प्रचलित हैं क्योंकि इन्होंने दैनिक जीवन के उदाहरण देकर उन्हें सरल, सहज और बोधगम्य बना दिया जिसके कारण ये सर्वसाधारण को जल्दी याद हो जाते हैं।

रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्याय, रहीम रत्नावली, बरवै आदि इनकी प्रमुख रचना है जो 'रहीम ग्रन्थावली' में संकलित है। सन् 1626 ई. में इनका देहान्त हो गया।

## कविता का सारांश

रहीम के दोहे उनके अपने निजी अनुभवों पर आधारित हैं। रहीम ने नीतिपरक दोहों के माध्यम से लोगों को नीतिपरक शिक्षाएँ दीं, मनुष्य को करणीय व अकरणीय आचरण से सम्बन्धित सुझाव दिए—

पहले दोहे में उन्होंने प्रेम सम्बन्धों को नाजुकता से संभालने व कभी न तोड़ने का संदेश दिया वहीं दूसरे दोहे में अपने मन की पीड़ा को दूसरों के सामने प्रकट न कर अपने ही मन में रखने को कहा। तीसरे दोहे में एक परमात्मा का ही ध्यान करने, उनके शरण में जाने से सर्वकार्य की सिद्धि होने की प्रेरणा दी। चौथे दोहे में राम के उदाहरण द्वारा चित्रकूट के महत्व को दर्शाया। वहीं पाँचवे दोहे में थोड़े से अक्षर वाले दोहे छंद में गहरा व व्यापक अर्थ छिपे होने की बात कही।

छठे दोहे में आकार के स्थान पर उपयोगिता के महत्व को बताते हुए कहा है कि जहाँ प्यास बुझे वही सागर के समान है। सातवें दोहे में कंजूस लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि जो लोग प्रसन्न होने पर भी दान नहीं देते वे पशु से भी हीन हैं। आठवें दोहे में एक बार बिगड़ जाने पर बात सँवारने के लिए लाखों जतन करने पड़ते हैं। नवें दोहे में छोटों की उपयोगिता व महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि बड़ों के समान छोटों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। दसवें दोहे में–मुसीबत के समय व्यक्ति की अपनी ही सम्पत्ति काम आती है। ग्यारहवें दोहे में पानी के महत्व को बताते हुए पानी के तीन रूप पानी, चमक व सम्मान इन तीनों का जीवन में महत्व बताया है।

## शब्दार्थ

**चटकाय**–झटके से तोड़ना; **गोय**–छिपाकर; **अठिलैहैं**–उपहास करना; **कोय**–कोई; **साधे**–साधने पर; **मूलहिं**–जड़ को; **अद्याय**–तृप्त होना; **सींचिबो**–सिंचाई करने से; **विपदा**–मुसीबत; **रमि**–रमना (रहना); **दीरघ**–लम्बा, गहरा; **आहिं**–होते हैं; **जाहिं**–जाता है; **सिमिटि**–सिमटकर; **धनि**–धन्य है; **पंक**–कीचड़; **लघु जिय**–छोटे जीव-जन्तु; **उदधि**–समुद्र; **बडाई**–बड़प्पन; **नाद**–आवाज; **रीझि**–मुग्ध होकर; **हेत**–प्रेम; **कछू**–कुछ; **बिगरी बात**–बिगड़ी हुई बात; **मथे**–मथना; **डारि**–डालना, छोड़ना; **तरवारि**–तलवार, कृपाण; **सहाय**–सहायक, मददगार; **जलज**–कमल का फूल; **रवि**–सूरज; **पानी**–सम्मान, पानी।

❑❑

# अध्याय - 3 आदमीनामा – *नज़ीर अकबराबादी*

## कवि-परिचय

नजीर अकबराबादी का जन्म उ.प्र. के आगरा शहर में सन् 1735 ई. में हुआ। आगरा के मशहूर अदीबों से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। नजीर राह चलते नज्मे कहने के लिये मशहूर थे। यदि राह में कोई राहगीर इन्हें रोककर स्वयं से सम्बन्धित नज्म कहने की गुजारिश करता तो नजीर तुरन्त ही एक नज्म उस राहगीर के लिये बना देते थे। इसी कारण भिश्ती, ककड़ी बेचने वाला, बिसाती तक नजीर की नज्में गाकर अपना सौदा बेचते थे। नजीर दुनिया के रंग में रंगे हुये एक कवि थे। नजीर हिन्दुओं के त्योहारों में भी दिलोजान से शामिल होते थे। नजीर ने राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित कविताएँ लिखी। नजीर मित्र की तरह लोगों को सलाह देते थे। इन्होंने हिन्दी व उर्दू दोनों भाषाओं में काव्य रचना की। नजीर की रचनाएँ जीवन की सच्चाई व उल्लास से भरी होती थी। इन्होंने अपनी कविताओं में दुनियाँ को हँसते-बोलते, चलते-फिरते और जीवन में खुशियाँ मनाते रूप में दिखाया। सन् 1830 ई. में इनका देहावसान हो गया।

## कविता का सारांश

आदमीनामा में नजीर अकबरावादी मनुष्य को उसकी अच्छाई और बुराई के साथ प्रस्तुत करते हैं। कवि ने आदमी को संसार की सर्वोत्तम रचना मानते हुये उसे अपने जीवन में सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणा दी है। वहीं दुनिया का बादशाह है और वही प्रजा है। रईस भी वही है और गरीब भी। मसजिद बनाने वाला, नमाज पढ़ने वाला, मसजिद में जूते चुराने वाला, नमाज़ पढ़ने वाला भी आदमी ही है। हत्यारा भी वही और रक्षक भी वही, शरीफ, कमीना आदि भी आदमी ही है। अच्छा भी आदमी है और बुरा भी आदमी है अर्थात् अच्छे से अच्छे कार्य भी आदमी करता है तथा बुरे से बुरे भी वही करता है।

## शब्दार्थ

**बादशाह**–राजा; **मुफलिस-ओ-गदा**–गरीब और भिखारी; **जरदार**–अमीर, धनवान; **बेनवा**–कमजोर; **निअमत**–बढ़िया भोजन; **खुतबाख्वाँ**–कुरान शरीफ का अर्थ बताने वाला; **ताड़ता**–भाँप लेना; **वारे**–न्यौछावर करता; **तेग**–तलवार; **अशराफ़**–शरीफ लोग; **कमीना**–तुच्छ; **शाह**–राजा; **वज़ीर**–मंत्री; **दिलपज़ीर**–मनचाहा; **मुरीद**–शिष्य; **पीर**–धार्मिक गुरु।

❑❑

# अध्याय - 4 एक फूल की चाह — *सियारामशरण*

## कवि-परिचय

सियारामशरण गुप्त का जन्म सन् 1895 में झाँसी के निकट चिरगाँव में हुआ था। ये राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई थे। इनके पिता भी कवि थे। इसलिए कविता लिखने के संस्कार इन्हें परिवार से विरासत में मिले थे। इनके ऊपर महात्मा गाँधी और विनोबा भावे के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा। इन्होंने अपनी रचनाओं में देश की ज्वलंत घटनाओं व समस्याओं का चित्रण करने के साथ सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रहार किया। गुप्त जी ने अपने काव्य में आधुनिक मानवता की करुणा, यातना और द्वंद्व को समन्वित रूप में प्रस्तुत किया।

मौर्य विजय, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, नकुल, आत्मोसर्ग, उन्मुक्त और दूर्वादल आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ है। सन् 1963 में गुप्त जी का निधन हो गया।

## कविता का सारांश

'एक फूल की चाह' सियारामशरण गुप्त जी की एक अति लोकप्रिय कविता है। प्रस्तुत कविता छुआछूत की समस्या से संबंधित है। सुखिया नाम की मरणासन्न अछूत कन्या के मन में अचानक यह इच्छा उठी कि उसे देवी माँ के चरणों में अर्पित किया हुआ फूल कोई लाकर दे। सुखिया का पिता इस काम को करने के लिए अर्थात् अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिए देवी माँ के मंदिर में पहुँचा, लेकिन वह भक्तों की नज़रों में खटकने के कारण प्रसाद अपनी बेटी तक न पहुँचा सका। भक्तों ने उसे अपशब्द कहे, मारा-पीटा तथा उसे सात दिन जेल की सज़ा भी दिलवाई। उसकी बेटी मर गई परंतु वह अंतिम समय उसे अपनी गोद में भी न ले सका। इस तरह से अस्पृशयता की समस्या, वर्ग-भेद, जाति-भेद, सामाजिक कुरीतियों इत्यादि के परिणामों को दर्शाना ही इस कविता का संदेश है, प्रतिपाद्य है।

## शब्दार्थ

**उद्वेलित**—भावनाओं में डूबकर; **प्रचंड**—तीव्र; **रव**—शोर; **क्षीणकंठ**—दबी हुई आवाज; **शुचिता**—पवित्रता; **सरसिज**—कमल; **तनु**—शरीर; **अवयव**—अंग; **ग्रसना**—निगलना; **हाहाकार**—चीखपुकार; **अपार**—अत्यधिक; **अविश्रोत**—बिना रुके; **विह्वल**—बेचैन; **शिथिल**—कमजोर; **नितांत**—बिल्कुल; **मृतवत्सा**—जिस माँ की संतान मर गयी हो; **अश्रु राशियाँ**—आँसुओं की धारा; **निहारना**—देखना; **तिमिर**—अंधेरा; **महाकाश**—खुला आकाश; **शैल**—पहाड़; **मुखरित**—प्रकट; **रविकर जाल**—सूरज की किरणों का समूह; **सिंह पौर**—मन्दिर का मुख्य द्वार; **धन**—बादल; **ताप-तप्त**—ज्वर से पीड़ित; **वृंद**—समूह; **ढिकला**—ठेला गया; **कलुषित**—अपवित्र; **मरघट**—शमशान घाट; **भय जर्जर**—डर से पीड़ित; **विस्तीर्ण**—फैला हुआ; **आमोदित**—आनंदपूर्ण; **परिधान**—कपड़े; **महामारी**—बड़े स्तर पर फैलने वाली बीमारी।

❑❑

# अध्याय - 5 अग्निपथ — *हरिवंशराय बच्चन*

## कवि-परिचय

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ। माता-पिता प्यार से इन्हें 'बच्चन' बुलाते थे जिसे बाद में इन्होंने अपना उपनाम बना लिया। बच्चन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगे लेकिन कुछ समय बाद ही ये भारतीय विदेश सेवा में चले गये। जहाँ रहकर इन्हें कई देशों में घूमते हुए मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ करने के लिए प्रसिद्धि मिली। बच्चन जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ मधुशाला, निशा-निमंत्रण, एकांतसंगीत, टूटती चट्टाने मिलन यामिनी, रूप तरंगिणी, आरती और अंगारे, नीड़ का निर्माण फिर (सभी कविता संग्रह) और आत्मकथा के चार खंड; क्या भूलूँ क्या याद करुँ, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक आदि हैं। बच्चन जी की कविताएँ सहज और संवेदनशील है। इनकी रचनाओं में व्यक्ति वेदना, राष्ट्रचेतना, और जीवनदर्शन प्रमुखला से दिखाई देते हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनैतिक जीवन के ढोग, सामाजिक असमानता और कुरीतियों पर व्यंग्य किया। बच्चन जी द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य की बेजोड़ कृति हैं।

सन् 2003 में हरिवंश राय जी का निधन हो गया।

## कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य के संघर्षमयी जीवन को अग्निपथ कहा है। उन्होंने इस कविता में कहा है कि अग्निपथ पर बढ़ते हुए मनुष्य को राह में सुख की चाह न कर, बिना रुके, बिना विश्राम किए अपनी मंजिल की ओर कर्मठतापूर्वक बढ़ते ही जाना चाहिए। कवि ने शब्दों की पुनरावृत्ति द्वारा मनुष्य को अपनी दृढ़ता पर डटे रहने तथा बिना विचलित हुए अपनी राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। अर्थात् यह जीवन फूलों की नहीं, बल्कि काँटों की शय्या है, जिस पर मनुष्य को हर प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करते हुए, बिना पीछे मुड़े अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस कविता का मूल मंत्र है।

## शब्दार्थ

**अग्निपथ**—बहुत ही कठिन मार्ग; **लथपथ**—सना हुआ; **स्वेद**—पसीना; **पत्र**—पत्ता; **रक्त**—खून; **शपथ**—कसम; **अश्रु**—आँसू;

❑❑

# अध्याय - 6 (i) नए इलाके में — *अरुण कमल*

## कवि-परिचय

अरुण कमल का जन्म 15 फरवरी 1954 को बिहार के रोहतास जिले के नासरीगंज इलाके में हुआ। वर्तमान समय में ये पटना विश्व-विद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। इनकी कविताओं के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ 'अपनी केवल धार', 'पुतली में संसार', सबूत, नाए इलाके में (कविता संग्रह) तथा कविता और समय (आलोचनात्मक कृति) आदि हैं। इन्होंने कविता लेखन के साथ कई पुस्तकों और रचनाओं का अनुवाद भी किया। जिनमें मायकोव्यस्की की आत्मकथा और जंगल बुक का हिन्दी में अनुवाद प्रमुख है। अरुण कमल जी ने हिन्दी के युवा कवियों की कविताओं का अंग्रेजी में भी अनुवाद किया जो 'वॉयसेज' के नाम से प्रकाशित हुआ।

इन्होंने अपनी कविताओं में आपबीती और जगबीती के साथ जीवन के विविध क्षेत्रों का चित्रण किया। इन्होंने वर्तमान शोषण व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश, नफरत का वर्णन किया तथा एक नई मानवीय व्यवस्था के निर्माण का प्रयास किया।

## कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता 'नए इलाके में' कवि अरुण कमल द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने दुनिया के अस्थायी रूप का वर्णन किया है। शहरीकरण के कारण जीवन-यापन में नए-नए परिवर्तन आ रहे हैं। लेकिन जो आज नया है वही कल पुराना पड़ रहा है। पुरानी पहचान के अर्थ ही बदल गए हैं। अपने मंज़िल रूपी घर तक भी पुरानी स्मृति के निशानों के सहारे नहीं पहुँचा जा सकता, क्योंकि नित्य नए-नए निर्माण कार्य हो रहे हैं, प्रगति रूपी शहरीकरण के कारण पुराने स्मृति चिह्न कहीं खो जाते हैं। मनुष्य के पास समय कम है, परन्तु उसकी गति बहुत तेज़ है। घर के सही पते के लिए कोई पहचान वाला चाहिए। अर्थात् जीवन में स्थायी कुछ भी नहीं है, क्योंकि हर पल बनती बिगड़ती दुनिया में स्मृतियों के भरोसे जी नहीं सकते। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस पाठ का प्रतिपाद्य है।

## शब्दार्थ

**ढहा**—गिरा; **इलाका**—क्षेत्र; **ताकता**—देखता; **ढहा**—गिरा हुआ; **ठकमकाता**—डगमगाता हुआ या धीरे-धीरे; **स्मृति**—यादें; **घट**—घटित होना; **अकास**—आसमान;

❑❑

# (ii) खुशबू रचते हैं हाथ — *अरुण कमल*

## कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता कवि अरुण कमल द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने सामाजिक विषमताओं का पर्दाफ़ाश किया है। यह कैसी विडंबना है कि जो वर्ग समाज के लिए सौंदर्य की सृष्टि करता है तथा उसे खुशहाल बनाता है, वही वर्ग अभावों में, अत्यधिक गंदगी भरे माहौल में अपना जीवन-यापन करता है। देश की मशहूर अगरबत्तियों का निर्माण करने वाले हाथ दयनीय, शोचनीय, भयावह परिस्थितियों में रहने को विवश हैं। सुगंध बिखेरने वाले ये लोग समाज में उपेक्षित हैं। ऐसी ही बातों को दर्शाकर कवि ने सरकार, समाज आदि को झकझोरा है, उनके सही कर्तव्य को चेताया है। यही इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

## शब्दार्थ

**टोला**—बस्ती; **मशहूर**—प्रसिद्ध; **खस**—पोस्ता; **जख्म**—घाव;

❑❑

# पूरक पाठ्य-पुस्तक संचयन (भाग-1)

## अध्याय - 1 गिल्लू — *महादेवी वर्मा*

### लेखिका-परिचय

श्रीमती महादेवी वर्मा आधुनिक युग की प्रसिद्ध कवियित्री एवं गद्य लेखिका मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में हुआ। उन्होनें सन् 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या से कुलपति बन गयीं। सन् 1987 ई० में उनका निधन हो गया।

महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने पद्मभूषण व भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया तथा कुमायूँ और दिल्ली विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया।

शृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाऐं, क्षवदा, मेरा परिवार, अतीत के चलचित्र आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं वहीं नीहार, नीरजा, रश्मि, यामा, दीपशिखा आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनायें है।

महादेवी वर्मा ने जहाँ एक तरफ दीन-दुखियों का मार्मिक चित्रण किया वहीं दूसरी ओर निरीह पशु-पक्षियों का भी हृदयस्पर्शी वर्णन किया।

### पाठ का सार

'गिल्लू' महादेवी वर्मा द्वारा रचित मार्मिक संस्मरण है। लेखिका सोनजुही बेल में लगी पीली-पीली कलियों को देखकर छोटे से प्राणी गिल्लू की यादों में खो जाती हैं। वह कभी सोनजुही लता की हरियाली में छिप जाता था तो कभी अचानक लेखिका के कंधे पर कूदकर बैठ जाता था तो लेखिका चौंक जाती थीं। लेखिका पहले सोनजुही की कली को खोजती फिरती थीं परंतु उन्हें अब गिल्लू की याद आती है जो अब नहीं है। लेखिका को पशु-पक्षियों से बहुत प्रेम था। लेखिका ने एक दिन देखा कि दो कौए एक गमले के चारों ओर छुआ-छुआवन जैसा खेल, खेल रहे हैं। अचानक लेखिका ने गमले से चिपके एक छोटे से गिलहरी के बच्चे को देखा। कौए उसे खाना चाहते थे। उन्होंने उसे अपनी चोंच से घायल कर दिया था जिससे वह मरे हुए के समान हो गया था। लेखिका ने उसे उठाया और भीतर ले गईं तथा इलाज किया, उसे मरहम लगाई तथा उसके मुँह में पानी की बूँदें टपकाईं। तीन दिन बाद वह लेखिका की उँगली पर बैठकर इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार महीने बाद उस गिलहरी के बच्चे के चिकने बाल, गुच्छेदार पूँछ और नीले मोती-सी आँखें सभी को आकर्षित करने लगीं। अब सभी उसको गिल्लू कहकर पुकारने लगे। उसे फूलों वाली छोटी-सी टोकरी में रुई बिछाकर खिड़की पर लटका दिया जाता था जिसमें वह दो वर्ष तक रहा। वह मोतियों जैसी आँखों से बाहर-भीतर सब कुछ देखता रहता। वह बहुत समझदार था। जब लेखिका लिखने बैठती तो वह पैरों तक आकर खिड़की के पर्दे पर चढ़ जाता। कभी-कभी लेखिका उसे पकड़ कर एक लिफाफे में रख देती तो वह घण्टों लेखिका के कार्यों को देखता रहता था।

गिल्लू के जीवन का पहला बसंत आया तो नीम-चमेली की सुगंध कमरे में आने लगी। बाहरी गिलहरियाँ खिड़की की जाली से उसे देखतीं, गिल्लू भी बाहर झाँकता। लेखिका ने उसे मुक्त करने के लिए जाली का एक कोना खोल दिया। गिल्लू बाहर निकलकर खुश हो गया परंतु जब लेखिका कॉलेज से लौटकर कमरा खोलती तो वह जाली के द्वार से अंदर आकर दौड़ने लगता।

लेखिका जैसी ही खाने के कमरे में पहुँचती गिल्लू मेज पर पहुँच जाता और थाली के पास बैठकर एक-एक चावल बड़ी सफाई से खाता रहता था। काजू उसे बहुत प्रिय थे।

एक बार लेखिका को मोटर दुर्घटना में घायल होने पर अस्पताल में रहना पड़ा। गिल्लू कमरे में झूले से उतर कर दौड़ लगाता रहता था। लोग काजू दे जाते थे परंतु वह उन्हें नहीं खाता था और झूले में छिपा देता था, जब झूले की सफाई की गई तो बहुत से काजू निकले।

गिलहरी का जीवन लगभग दो साल होता है। अब उसका अंत निकट आ गया था। उसने दिन भर कुछ नहीं खाया और न बाहर ही गया। रात को झूले से निकलकर लेखिका के बिस्तर पर आया और उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जैसे बचपन में मरणासन्न हालत में उसने अंगुली पकड़ी थी। उसे बचाने का उपाय किया गया परन्तु सुबह होते ही उसके जीवन का अंत हो गया।

### शब्दार्थ

**सोनजुही**—जूही (फूल) का एक प्रकार जो पीला होता है।; **स्निग्ध**—चिकना; **खाद्य**—खाने योग्य; **पीताभ**—पीले रंग का; **लघुप्राण**—छोटा जीव; **हरीतिमा**—हरियाली; **अनायास**—अचानक; **छूआ-छुऔवल**—चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना; **समादरित**—विशेष आदर; **अनादरित**—तिरस्कार; **अवतीर्ण**—प्रकट होना; **कर्कश**—कटु; **काकद्वय**—दो कौए; **निश्चेष्ट**—बिना किसी हरकत के; **आश्वत**—निश्चिंत; **लघुगात**—छोटा शरीर; **परिचारिका**—सेविका; **मरणासन्न**—जिसकी मृत्यु निकट हो; **उष्णता**—गरमी।

❑❑

# अध्याय - 2 स्मृति — *श्रीराम शर्मा*

## लेखक-परिचय

अनोखी प्रतिभा से सम्पन्न पं श्रीराम शर्मा का जन्म सन् 1896 ई० को हुआ। इन्होंने प्रारंम्भिक जीवन में अध्यापन का कार्य किया। बाद में राष्ट्रसेवा व साहित्य सेवा में जुट गये। इन्होने शिकार साहित्य के द्वारा हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र में नाम कमाया तथा गद्य की एक नयी विधा 'रेखाचित्र' का प्रारम्भ किया। विशाल भारत के सम्पादक के रूप में सम्पादन क्षेत्र में भी ख्याति अर्जित की। इनकी हृदयस्पर्शी रचनाएँ पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। सन् 1967 में इनका देहान्त हो गया। शिकार, बोलती प्रतिभा, जंगल के जीव, सेवाग्राम की डायरी, सन् 1942 के संस्मरण आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

## पाठ का सार

सन् 1908 की बात है। जाड़े का महीना था। सायंकाल के समय कई साथियों के साथ लेखक झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था, तभी गाँव के पास से एक आदमी ने पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं। भाई साहब की मार का डर था, समझ में नहीं आ रहा था कि कौन-सा कसूर बन पड़ा। डरते-डरते घर में घुसा पर आँगन में भाई साहब पत्र लिख रहे थे। भाई साहब ने पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डालने को कहा।

लेखक अपने छोटे भाई के साथ अपना डंडा लेकर घर से निकल पड़ा। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच डंडे से आम के पेड़ों से प्रति वर्ष आम झूरे जाते थे। चिठ्ठियों को उसने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं और मक्खनपुर की ओर तेजी से चलते हुए दोनों गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गये जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ गहरा था। उसमें पानी न था। एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि कुएँ में उझकने की सूझी। झाँककर एक ढेला फेंका कि साँप की आवाज कैसी होती है? कुएँ में ज्यों ही ढेला गिरा त्यों ही एक फुँकार सुनाई पड़ी और क्रोधपूर्ण फुँकार पर कहकहे लगाये।

गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। जैसे ही वे दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढेला फेंककर फुँकार सुनने की इच्छा जाग्रत हो गई। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उछलकर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। चिट्ठियों के टोपी से निकलते ही जान निकल गई।

कुएँ की पाट पर बैठे वे रो रहे थे। पिटने के भय से रोते ही जा रहे थे। माँ की गोद की याद आती थी। माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़-प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी। घर लौटकर सच बोलने पर रूई की तरह धुनाई होती। पिटने के भय और झूठ बोलकर चिट्ट्यों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। लेखक ने कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। यह भयंकर निर्णय था। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिये वह विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया।

छोटा भाई रो रहा था। उसके रोने का मतलब था कि लेखक की मौत उसे नीचे बुला रही है। छोटा भाई भी नंगा हुआ। पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँ की गहराई के लिये काफी हुईं। धोतियाँ एक-दूसरे से बाँधीं और खूब खींच-खींचकर देखा कि गाँठें कड़ी हैं या नहीं। धोती के एक सिरे पर डंडा बाँधा और उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था। लेखक कुएँ में धोती के सहारे घुसने लगा। कुएँ में घुसते समय साँप का तनिक भी भय न था। कुएँ के धरातल से जब चार-पाँच गज रहा होगा, साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ का भाग पृथ्वी पर था। नीचे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। धोती कुएँ के बीचों-बीच लटक रही थी। कुएँ में साँप से अधिक से अधिक चार फुट की दूरी पर रह सकता था। ऊपर से लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था। वह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए उसने अपने पैर कुएँ की बगल में लगा दिये। दीवार से पैर लगाते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने उस पर मुँह मारा। वह डेढ़ गज पर कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओर को आक्रमण करता है। साँप ने मोहनी-सी डाल दी। वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था। डंडा चलाने के लिये स्थान ही न था। साँप को डंडे से दबाया जा सकता था। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा तो फिर वह पलटकर जरूर काटता और फन के पास दबाने की कोई सम्भावना भी होती तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ट्यों को कैसे उठाता? दो चिट्ट्याँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक लेखक की ओर थी। उसने सोचा डंडे से साँप की ओर से चिट्ट्यों को सरकाया जाये।

## शब्दार्थ

**आखिर**—अंतिम; **चिल्ला**—कड़ाके की सर्दी; **आशंका**—शंका से भरा; **मज्जा**—हड्डी के भीतर भरा मुलायम पदार्थ; **झुरे**—तोड़ना; **प्रसन्नवदन**—प्रसन्न चेहरा; **उझकने**—उचकना; **किलोल**—क्रीड़ा; **मृगशावक**—हिरण का बच्चा; **ढाढे मारकर रोना**—जोर-जोर से रोना; **उद्वेग**—बेचैनी; **दुधारी**—दोनों तरफ से धार वाली; **प्रतिद्वंद्वी**—विपक्षी; **चक्षुःश्रवा**—आँख से सुनने वाला; **पैतरे**—मुद्रा; **अवलंबन**—सहारा; **कायल**—मानने वाला; **गुंजल्क**—कुंडलित; **ताकीद**—बार चेताने की क्रिया; **डैने**—पंख।

❑❑

# अध्याय - 3 हामिद खाँ — *एस. के. पोट्टेकाट*

## लेखक-परिचय

मलयालम साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार एस. के. पोट्टेकाट का जन्म सन् 1913 को कोषिकोड (कालीकट) में हुआ। उनका पूरा नाम शंकरन कुट्टी पोट्टेकाट था। इंटरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद साहित्य रचना प्रारम्भ की। इन्होंने अपनी कहानियों में किसान व मजदूर वर्ण की दु:ख व वेदना को प्रमुखता से उजागर किया। इन्होंने धर्म और सम्प्रदाय के स्थान पर विश्वबंधुत्व व भाईचारे के संदेश को अपनी रचनाओं में प्रसारित किया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ प्रेम शिशु, विषकन्या और मूडुपडम् आदि है जिनका विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका हे। पोट्टेकाट जी को इनके साहित्य की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादमी तथा ज्ञानपीठ पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

एस. के. पोट्टेकाट का सन् 1982 में निधन हो गया।

## पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ 'हामिद खाँ' लेखक एस. के. पोट्टेकाट द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने बड़ी ही सजीवता-सहजता तथा बारीकी से हिंदू और मुसलमान दोनों के दिलों में धड़कती तथा हिलोरे लेती सहृदयता एवं एकता की भावना को उजागर किया है। तक्षशिला निवासी हामिद खाँ के हृदय को लेखक की आपसी मुलाकात तथा निरपेक्ष मानवीय भावना जब स्पर्श करती है, तो दोनों में एक सौहार्दपूर्ण आत्मीय संबंध स्थापित हो जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय तथा तक्षशिला में बसे मुसलमानों की आंतरिक भावनाओं का लेखक ने बड़ा ही भावपूर्ण तथा मार्मिक चित्रण किया है।

लेखक कहता है कि जब वह दो साल पहले तक्षशिला के खंडहर देखने गया था तो वहाँ की कड़कड़ाती धूप में भूख-प्यास से वह बेहाल हो गया था। तभी वह चपातियों की सोंधी महक सूँघकर एक दुकान की ओर मुड़ गया और दुकान के अंदर चला गया। वहाँ एक अधेड़ उम्र का पठान अँगीठी के पास बैठा चपातियाँ सेंक रहा था। लेखक को देखकर वह उसे घूरने लगा। लेखक ने धीमी आवाज़ में पूछा कि कुछ खाने को मिलेगा, तो उस अधेड़ उम्र के पठान ने पूछा कि भाई जान आप कहाँ के रहने वाले हो। लेखक ने बताया कि वह मालाबार का रहने वाला है, तो उस व्यक्ति ने शंका-सी व्यक्त की कि क्या वह हिंदू होकर एक मुसलमानी ढाबे में खाना खाएगा ? लेखक ने 'हाँ' करते हुए बताया कि हमारे यहाँ बढ़िया चाय या बढ़िया पुलाव के लिए लोग मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। लेकिन उसे लेखक की इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेखक ने उसे बताया कि हमारे यहाँ हिंदू-मुसलमान में कोई अंतर नहीं है तथा सभी मिल-जुलकर रहते हैं। वहाँ हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे-फसाद भी न के बराबर होते हैं। उस आदमी ने लेखक की बात को ध्यानपूर्वक सुना और बोला कि काश! मैं आपके मुल्क में आकर सब बातें अपनी आँखों से देख पाता। उस व्यक्ति का नाम हामिद खाँ था। उसने लेखक को बड़ी मुहब्बत से खाना खिलाया तथा लेखक ने बड़े ही चाव से भरपेट खाना खाया। जब लेखक ने हामिद खाँ को पैसे दिए तो उसने लेने से इंकार कर दिया। लेकिन लेखक के जबरदस्ती करने पर एक रुपया ले लिया और फिर वापस करते हुए कहा कि जब आप अपने मुल्क में पहुँचें तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इस पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें। वास्तव में हिंदू-मुसलमान एक हैं, इस तथ्य को दर्शाना ही इस पाठ का मूल उद्देश्य है।

## शब्दार्थ

**आगजनी**—उपद्रवियों द्वारा आग लगाना; **सहृदय**—अच्छे मन वाला; **दढ़ियल**—दाढ़ी वाला; **तृप्त**—संतुष्ट; **तश्तरी**—प्लेट, थाली; **अधेड़**—ढलती उम्र का; **छोकरा**—लड़का; **अलमस्त**—मस्त; **फख्र**—गर्व; **क्षुधा**—भूख; **नियति**—भाग्य; **मुल्क**—देश; **सांप्रदायिकता**—धार्मिक कटुता; **पिछवाड़े**—पीछे का भाग; **पौराणिक**—जिसका वर्णन पुराणों में हो;

❑❑

# अध्याय - 4 दिए जल उठे — *मधुकर उपाध्याय*

## लेखक-परिचय

पत्रकारिता से जुड़े और इतिहास के संवेदनशील मुद्दों पर लिखने वाले मधुकर उपाध्याय ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अयोध्या से प्राप्त करने के पश्चात् अवध विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की उपाधि तथा बाद में भारतीय जनसंचार संस्थान नयी दिल्ली से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा हासिल किया।

आजादी की पचासवीं वर्षगाँठ पर मधुकर उपाध्याय की पुस्तक 'पचास दिन, पचास साल पहले' खासी चर्चित रही। उनकी एक अन्य पुस्तक 'किस्सा पांडे सीताराम सूबेदार' को भी काफी सराहा गया। मधुकर उपाध्याय की तीन पुस्तकें अंग्रेजी और बारह हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं। पत्रकारिता और साहित्य के साथ-साथ उनकी गहरी दिलचस्पी कार्टून विधा और रेखांकन में भी है। मधुकर उपाध्याय दैनिक 'लोकायत समाचार' के प्रधान संपादक रहे हैं।

## पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ 'दिए जल उठे' लेखक मधुकर उपाध्याय द्वारा लिखित है। इस पाठ का यह अंश महात्मा गाँधी की दांडी यात्रा पर आधारित 'धुँधले पद चिह्न' नामक रचना से उद्धरित है। इसमें लेखक ने 19 मार्च, 1930 के दिन घटी घटना का वर्णन करते हुए 'रास' में पटेल जी की गिरफ्तारी तथा गाँधी जी की दांडी यात्रा संबंधी वर्णन किया है। इसमें लोगों का तप और त्याग तथा घनी अँधेरी रात में गाँधी जी को नाव से महि सागर पार कराने के लिए लोगों ने क्या-क्या समर्पण किया—आदि बातों का अद्भुत वर्णन पाठकों को कौतूहल की दुनिया में पहुँचा देता है। वास्तव में पाठ का यह अंश रोचकता तथा सजीवता से ओत-प्रोत है।

लेखक मधुकर उपाध्याय कहते हैं कि दांडी कूच की तैयारी के सिलसिले में बल्लभभाई पटेल सात मार्च को रास पहुँचे। वहाँ उन्होंने लोगों के आग्रह पर दो शब्द कहना स्वीकार कर लिया। उन्होंने केवल इतना ही कहा था कि भाइयो और बहनो, क्या आप सत्याग्रह के लिए तैयार हैं, इसी बीच सरदार पटेल की गिरफ़्तारी स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर हुई थी। पटेल ने इस कलेक्टर को पिछले आंदोलन के समय अहमदाबाद से भगा दिया था। सरदार पटेल को 500 रुपये जुर्माना तथा तीन महीने की जेल हुई। पटेल की गिरफ़्तारी पर देश भर में प्रतिक्रियाएँ हुईं। इसलिए गाँधी जी ने दांडी कूच शुरू होने से पहले ही यह निश्चय कर लिया कि वह अपनी यात्रा ब्रिटिश आधिपत्य वाले भू-भाग से ही करेंगे। सत्याग्रही बड़ी धूम-धाम से रास में दाखिल हुए। वहाँ गाँधी जी को एक धर्मशाला में ठहराया गया और शेष सत्याग्रहियों को तंबुओं में रुकवाया गया। यहाँ अपने भाषण में गाँधी जी ने कहा कि यह गिरफ़्तारी की सज़ा सरदार पटेल को आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने लोगों से सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के लिए कहा, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने आतंक मचा रखा था। ब्रिटिश शासकों में एक ऐसा वर्ग था, जिसे लग रहा था कि गाँधी और उनके सत्याग्रही मही नदी के किनारे अचानक नमक बना कर कानून तोड़ देंगे, इसलिए नमक के सारे भंडार तट से हटा दिए गए और उन्हें नष्ट कर दिया गया, ताकि इसका कोई खतरा ही न रहे। यात्रा के कार्यक्रम में परिवर्तन करके यह निश्चय किया गया कि नदी को आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ने पर पार किया जाए, ताकि कीचड़ और दलदल में कम-से-कम चलना पड़े। गाँधी जी को पार कराने की जिम्मेदारी रघुनाथ काका को सौंपी गई और उन्हें निषादराज कहा गया। जब समुद्र का पानी चढ़ना शुरू हुआ तो चारों ओर घना अँधेरा छा गया। छोटे दिए इसे भेद नहीं पा रहे थे। लेकिन थोड़ी ही देर में कई हज़ार लोग नदी तट पर पहुँच गए थे। पूरा गाँव और आस-पास के लोग दिए की रोशनी लिए गाँधी जी का और सत्याग्रहियों का इंतजार कर रहे थे। रात बारह बजे महि सागर नदी का किनारा भर गया। गाँधी जी झोंपड़ी से बाहर निकले और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। यह यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा था। नदी के दूसरी ओर तट पर लोग दिये लिए खड़े थे। सत्याग्रहियों को पार आना था। लोगों की समर्पण तथा नि:स्वार्थ भावना को दर्शाना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

❑❑

## खण्ड-घ (लेखन)

# अध्याय - 1 अनुच्छेद-लेखन

## स्मरणीय बिन्दु

**अनुच्छेद लेखन**—एक विचार-बिन्दु जितने वाक्यों में लिखा जाता है, उस वाक्य समूह को अनुच्छेद कहते हैं। अनुच्छेद लेखन में एक ही परिच्छेद में प्रस्तुत विषय को सीमित कर दिया जाता है। इसमें निबन्ध की तरह प्रस्तावना, मध्य भाग व उपसंहार जैसे विभाजन नहीं होता।

अनुच्छेद लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए-

- अनुच्छेद लगभग 80-100 शब्दों में लिखना चाहिए।
- अनुच्छेद का आरम्भ सीधे विषय से होना चाहिए।
- वाक्य छोटे और आपस में जुड़े होने चाहिए।
- भाषा सरल तथा सार्थक होनी चाहिए।
- दिए गए संकेत बिन्दुओं को समझकर विषय को स्पष्ट करना चाहिए।

❑❑

# अध्याय - 2 पत्र-लेखन (अनौपचारिक)

## स्मरणीय बिन्दु

पत्र-लेखन की कला अत्यन्त प्राचीन है। मनुष्य के पठन-पाठन के साथ ही इस विद्या का प्रारम्भ हुआ था। पत्र वह संदेश वाहक दूत है, जो हमारे संदेश दूर बैठे परिचितों-अपरिचितों तक पहुँचाता है। इसके द्वारा मन की बात लिखकर विस्तार से प्रकट की जा सकती है। पत्र को अगर 'मन का आईना' कहा जाए जो अतिशयोक्ति न होगी। इसलिए आज के कम्प्यूटर युग में पत्र का हमारे जीवन में एक विशेष महत्त्व है। यद्यपि मोबाइल के चलन में आने से अब पत्र लेख का चलन कम हो गया है फिर भी पत्रों की आवश्यकता हमें पड़ती ही है।

**अच्छे पत्र की विशेषताएँ**

वास्तव में पत्र लिखना भी एक कला है। इसलिए अच्छे पत्र में निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है-

**(1)** पत्र की भाषा-शैली सरल हो।

**(2)** पत्र में संक्षिप्तता, क्रमबद्धता तथा प्रभावान्विति हो।

**(3)** पत्र में विनम्रता एवं बाह्य आकर्षण हो।

**पत्रों के प्रकार**

पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-

**(1) अनौपचारिक अथवा पारिवारिक पत्र**—इसके अन्तर्गत परिवार के लोगों, मित्रों व निकट सम्बन्धियों को लिखे जाने वाले पत्र आते हैं।

**(2) औपचारिक अथवा कार्यालयी पत्र**—इसके अन्तर्गत आवेदन पत्र, कार्यालयी पत्र, संपादकीय पत्र, प्रार्थना पत्र तथा व्यावसायिक पत्र आते हैं।

❑❑

# अध्याय - 3 चित्र वर्णन

## स्मरणीय बिन्दु

चित्र पर आधारित प्रस्ताव लिखना भी एक कला है। चित्र को देखकर हम अपने भावों, विचारों और घटनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। इसलिए चित्रों का रचनात्मक क्षेत्रों में विशेष महत्त्व है। बच्चों की अभिव्यक्ति कला के विकास के लिए चित्र वर्णन के अभ्यास अत्यन्त आवश्यक हैं।

चित्र लेखन के समय निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

**1.** चित्र को सूक्ष्मता से देखकर उसमें छिपी बारीकियों का अवलोकन करना चाहिए।

**2.** चित्र में दिखाई देने वाले लोगों के चेहरों के भावों, पहनावे, हाव-भाव तथा क्रियाओं पर विचार करके उसके कारणों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

**3.** वाक्य छोटे-छोटे हों और प्रत्येक नवीन विचार नए अनुच्छेद से प्रारंभ होना चाहिए।

**4.** वाक्यों की भाषा सरल होनी चाहिए तथा वाक्य आपस में एक-दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

**5.** वाक्य अधिक बड़े भी न हों, न ही अधिक छोटे हों। वे अर्थ की दृष्टि से पूर्ण होने चाहिए।

**6.** वाक्य रचना के उपरांत वाक्यों को पुन: अवश्य पढ़ना चाहिए।

❑❑

# अध्याय - 4 संवाद-लेखन

## स्मरणीय बिन्दु

संवाद का अभिप्राय बातचीत अथवा वार्तालाप से है। दो व्यक्तियों की बातचीत को ही संवाद कहा जाता है।

संवाद लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- संवाद छोटे, सरल और संक्षिप्त होने चाहिए।
- संवाद की भाषा स्पष्ट, पात्रानुकूल व भावानुकूल होनी चाहिए।
- संवाद रोचक तथा सरल होने चाहिए।
- संवाद घटना, परिस्थिति व समयानुकूल होने चाहिए।
- संवाद लिखते समय उपयुक्त विराम-चिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- पात्रों के मनोभावों को कोष्ठकों में लिखना चाहिए।

❑❑

# अध्याय - 5 विज्ञापन-लेखन

## स्मरणीय बिन्दु

वि (विशेष) + ज्ञापन (जानकारी देना) अर्थात् किसी के बारे में विशेष रूप से जानकारी देना।

आज का युग विज्ञापनों का युग है। रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ आदि इसके मुख्य साधन हैं। विज्ञापन एक कला है और इसका अर्थ है कि उत्पादक अपने सामान की गुणवत्ता, सूचना, जानकारी और प्रसिद्धि को जन-जन तक पहुँचाता है। आज तो विज्ञापनों द्वारा अधिकतर व्यापार चलता है। विज्ञापनों के लिए आजकल तो कंप्यूटर की सहायता से बड़े ही आकर्षक डिजायन बनाए जाते हैं। तभी विज्ञ. ापनों का हमारे लिए उपयोग और महत्व है।

विज्ञापन लेखन लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

- विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में ही लिखना चाहिए।
- विषय का आरंभ सीधा विषय से होना चाहिए।
- वाक्य छोटे-छोटे तथा आपस में जुड़े होने चाहिए।
- भाषा सरल तथा सार्थक होनी चाहिए। तुकदार शब्दों का प्रयोग विज्ञापनों की भाषा में होता है।
- अभ्यास तथा प्रयास से विज्ञापन लेखन में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

❑❑